Welcome to Class24

SSC | Railways | NEET | RAS | IIT - JEE

Teaching Exams | School Pre-Foundation | Rajasthan Exams

राजस्थान की हवेलियाँ

राजस्थान में हवेली निर्माण की परम्परा काफी पुरानी है, राजस्थान में 17वीं व 18 वीं शताब्दी में काफी हवेलियों का निर्माण हुआ। राजस्थान में सर्वाधिक हवेलियों का निर्माण शेखावाटी क्षेत्र में हुआ है। हवेली निर्माण में मुख्य योगदान सेठ साहुकारों, राजपरिवार से जुड़े लोगों, सामंतो का रहा है। जयपुर की हवेली परम्परा इतनी प्रसिद्ध हुई कि बाद में शेखावाटी के धनिकों ने अपने-अपने गाँव में विशाल हवेलियाँ बनवाने की परम्परा की नींव डाली। जैसलमेर की हवेलियाँ पत्थर की जाली एवं कटाई के कारण दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गयी हैं। राजस्थान में हवेली निर्माण शैली विशुद्ध रूप से हिन्दू शैली है।

- हवेलियों की नगरी- जैसलमेर
- हजार हवेलियों की नगरी- बीकानेर
- भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हवेलियाँ- शेखावाटी में

उदयपुर सम्भाग

बागोर हवेली-उदयपुर

- यह हवेली पिछोला झील के किनारे गणगौर घाट के पास बनी है। इसका निर्माण मेवाड़ के प्रधानमंत्री रहे अमरचन्द बड़वा द्वारा करवाया गया था। (जो 1751 से 1778 ई. तक प्रधानमंत्री रहे थे) । इसमें 138 कमरे व बरामदे बने हैं।
- बागोर की हवेली की शीशे की खिड़की पर 1 जनवरी 2017 को 25 रुपये का डाकटिकट जारी हो चुका है।

- इसमें पगड़ियों का संग्रहालय बना है यहीं पर विश्व की सबसे बड़ी पगड़ी है। इसी में कठपुतलियों का संग्रहालय है।
- इस हवेली के एक हिस्से में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र भी संचालित है। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के संस्कृति विभाग द्वारा 1985-86 ई. में देशभर में 7 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किये थे। जिनमें से एक पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (स्थापना 1986) उदयपुर भी है पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक - केन्द्र एक रजिस्टर्ड सोसायटी है जिसकी संचालन परिषद् के स्थायी अध्यक्ष/सभापति 'राजस्थान के राज्यपाल' हैं।

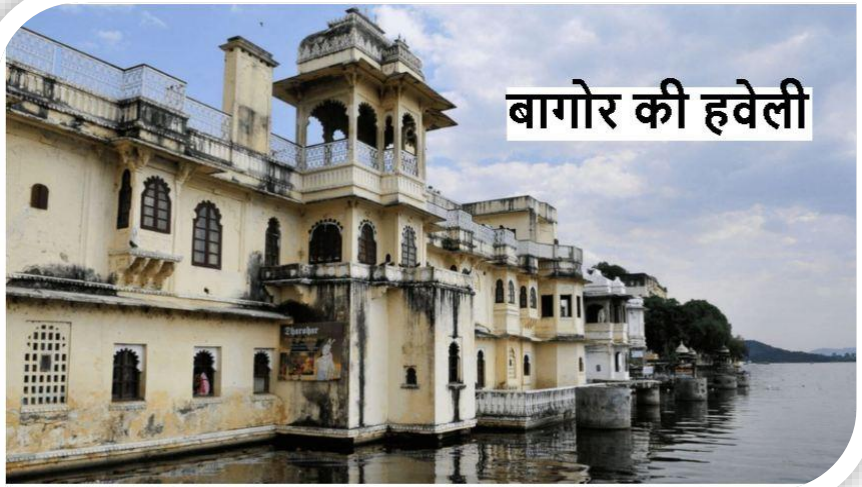
बागोर की हवेली

राजस्थान की हवेलियाँ राजस्थान की हवेलियाँ

- बाफना की हवेली- उदयपुर
- मोहनसिंह की हवेली- उदयपुर
- पीपलियाँ की हवेली- उदयपुर
- भामाशाह की हवेली- चित्तौड़गढ़ दुर्ग
- जयमल व पत्ता की हवेलियाँ- चित्तौड़गढ़ दुर्ग
- राव रणमल्ल की हवेली- चित्तौड़गढ़ दुर्ग
- आल्हा काबरा की हवेली- चित्तौड़गढ़ दुर्ग
- पुरोहित जी की हवेली- चित्तौड़गढ़ दुर्ग
  तुलजा भवानी मंदिर के पास बनी है।
- सलूम्बर ठिकाने की हवेली- चित्तौड़गढ़ दुर्ग
- रामपुरा ठिकाने की हवेली- चित्तौड़गढ़ दुर्ग

कोटा सम्भाग

- बड़े देवता की हवेली - कोटा
  देवता श्रीधरजी की हवेली है।

- झाला जालिम सिंह की हवेली – कोटा

- झालाओं की हवेली- शेरगढ़ दुर्ग, बारां

- दीवान साहब की हवेली- झालावाड़

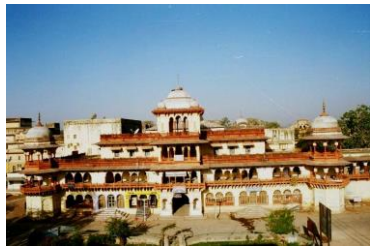

जयपुर सम्भाग

- धाबाई की हवेली- जयपुर नाटाणी की हवेली- जयपुर
- पुरोहित प्रतापनारायण जी की हवेली- जयपुर
- रत्नाकर भट्ट पुण्डरिक की हवेली- जयपुर

  इसमें कलात्मक भित्ति चित्र बने हैं।
- टीबड़े वालों की हवेली- झुंझुनूं
- इसरदास मोदी की हवेली- झुंझुनूं

  100 से अधिक खिड़कियों के लिए प्रसिद्ध है।
- सीताराम सिंगतिया की हवेली-बिसाऊ (झुंझुनूं)
- सेठ हीरालाल बनारसीलाल की हवेली- बिसाऊ (झुंझुनूं)

राजस्थान की हवेलियाँ राजस्थान की हवेलियाँ

- सेठ जयदयाल केडिया की हवेली - बिसाऊ (झुंझुनूं)
- नाथुराम पौद्दार की हवेली- बिसाऊ (झुंझुनूं)
- भगतों की हवेली- नवलगढ़ (झुंझुनूं)

  यह नवलगढ़ की विशालतम हवेलियों में से एक है।
- पौद्दार हवेली- नवलगढ़ (झुंझुनूं)
- भगेरिया हवेली- नवलगढ़ (झुंझुनूं)
- गोविन्द सेखसरिया की हवेली- नवलगढ़ (झुंझुनूं)
- रूपनिवास की हवेली- नवलगढ़ (झुंझुनूं)
- जालान हवेली -नवलगढ़ (झुंझुनूं)
- केसरदेव कानोड़िया की हवेली -मुकुन्दगढ़ (झुंझुनूं)

राजस्थान की हवेलियाँ राजस्थान की हवेलियाँ

- सेठ राधाकृष्ण की हवेली - मुकुन्दगढ़ (झुंझुनूं)
- सागरमल लाड़िया हवेली- मण्डावा (झुंझुनूं)
- रामदेव चोखाणी हवेली- मण्डावा (झुंझुनूं)
- रामनाथ गोयनका हवेली- मण्डावा (झुंझुनूं)
- विश्वनाथ गोयनका की हवेली- मण्डावा (झुंझुनूं)
- मोहनलाल नेवटिया की हवेली- मण्डावा (झुंझुनूं)
- सर्राफों की हवेली- मण्डावा (झुंझुनूं)
- सोने चाँदी की हवेली- महनसर (झुंझुनूं)
- केजरीवाल हवेली -अलसीसर (झुंझुनूं)

राजस्थान की हवेलियाँ राजस्थान की हवेलियाँ

- सेठ लालचन्द गोयनका की हवेली- डूंडलोद (झुंझुनूं)
- बिरला हवेली - पिलानी (झुंझुनूं)
- डालमिया की हवेली - चिड़ावा (झुंझुनूं)
- बगड़ियाँ की हवेली - चिड़ावा (झुंझुनूं)
- गौरीलाल बियाणी की हवेली- सीकर
- नई हवेली -सीकर
- ताराचन्द रूईया की हवेली- रामगढ़ (सीकर)
- खेमका सेठों की हवेली- रामगढ़ (सीकर)
  रामनारायण खेमका की हवेली भी कहलाती है।
- रामगोपाल पौहार की हवेली- रामगढ़ (सीकर)
- घनश्यामदास पोद्दार की हवेली- रामगढ़ (सीकर)

राजस्थान की हवेलियाँ राजस्थान की हवेलियाँ

- केडिया हवेली - लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
- राठी हवेली - लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
- गनेड़ी वालों की चार चौक हवेली - लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
- चेतराम की हवेली - लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
- नाविन ला प्रिन्स हवेली -फतेहपुर (सीकर)
- नंदलाल देवड़ा की हवेली - फतेहपुर (सीकर)
- सिंघानिया हवेली - फतेहपुर (सीकर)
- फतेहचंद की हवेली - फतेहपुर (सीकर)
- पंसारी हवेली - श्रीमाधोपुर (सीकर)

अजमेर सम्भाग

- बादशाह की हवेली – अजमेर

- केसरी सिंह बारहट की हवेली – शाहपुरा (भीलवाड़ा)

- सुनहरी कोठी- टोंक (विस्तृत विवरण महल व पैलेस में)

जोधपुर सम्भाग

- बड़े मियां की हवेली - जोधपुर
- पाल हवेली - जोधपुर
- राखी हवेली - जोधपुर
- पोकरण हवेली - जोधपुर
- पच्चीसा हवेली - जोधपुर
- पुष्य नक्षत्र हवेली - जोधपुर
- यह राजस्थान की एकमात्र हवेली है, जिसका निर्माण एक ही पुष्य नक्षत्र में किया गया है। इसका निर्माण जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय के शिल्पी भूर जी जोशी ने करवाया था।

जोधपुर सम्भाग

- आसोप हवेली - जोधपुर
- अमरचंद कोचर की हवेली - फलौदी (जोधपुर)
- फूलचंद गोलछा की हवेली- फलौदी (जोधपुर)
- सांगीदास थानवी की हवेली- फलौदी (जोधपुर)
- लालचन्द ढड्ढा की हवेली- फलौदी (जोधपुर)

पटवों की हवेली – जैसलमेर

- इसमें सिंन्ध, भारत, मुगल व यहूदी स्थापत्य कला का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इसका निर्माण व्यवसायी गुमानचन्द बाफना के 5 पुत्रों द्वारा 18वीं शताब्दी में करवाया गया था। यह हवेली 5 मंजिला है। यह जैसलमेर की **सबसे बड़ी हवेली** है।

सालिम सिंह की हवेली – जैसलमेर

- इसका निर्माण सालिम सिंह मेहता (जैसलमेर के प्रधानमंत्री) द्वारा 1825 ई. में करवाया था। यह 9 मंजिलों में बनी थी इसलिए इसे 'नौ खण्डी हवेली' भी कहते हैं। इसके 7 खण्ड पत्थर के हैं 8वाँ व 9वाँ लकड़ी के बने थे। 6वीं मंजिल को जहाज महल और 7 वीं मंजिल को मोती महल कहा जाता है वर्तमान में इसके ऊपर के लकड़ी के बने दो मंजिल रंगमहल व शीशमहल को हटा लिया गया है।

नथमल की हवेली- जैसलमेर

- इसका निर्माण जैसलमेर के दीवान नथमल मेहता द्वारा 1884-85 ई. में महारावल बैरीसाल के समय करवाया गया था। इसके कारीगर लालू व हाथी नामक दो भाई थे। इस हवेली में कहीं भी किसी शिल्प का दोहराव नहीं किया गया है।

सोढ़ों की हवेली- जैसलमेर

- दीवान आचार्य ईसरलालजी की हवेली- जैसलमेर
- राव राजा बरसलपुर की हवेली- जैसलमेर

नोट- जैसलमेर की हवेलियों में पीले पत्थरों पर कलात्मक नक्काशी, बेल-बूटे, ज्यामितिय आकार व कलश आदि उकेरे गये हैं।

बीकानेर सम्भाग

बच्छावतों की हवेली- बीकानेर

- लाल पत्थरों से बनी इस हवेली का निर्माण कर्ण सिंह बच्छावत ने 1593 ई. में करवाया था। यह बीकानेर की सबसे पुरानी हवेली मानी जाती है।

- **रामपुरिया की हवेली -** बीकानेर

  इस हवेली के स्थापत्य में बीकानेर, मुगल, हिन्दू और यूरोपीय कला का अदभुत समन्वय हैं।
- **मोहता हवेली-** बीकानेर
- **डागा हवेली-** बीकानेर, डागा चौक में बनी है।
- **कोठारी की हवेली-** बीकानेर
- **सेठ चांदमल ढड्ढा की हवेली-** बीकानेर
- **गुलेच्छा की हवेली-** बीकानेर

- **सेठिया की हवेली-** बीकानेर
- **मूंदड़ा की हवेली-** बीकानेर

नोट- बीकानेर की हवेलियाँ लाल पत्थर से युक्त हैं, इनकी सजावट में मुगल, किशनगढ़ एवं यूरोपीय शैली प्रयुक्त की गई है।

- **सुराणाओं की हवेली-** चुरू

  इसमें 1100 दरवाजे, खिड़कियाँ बनी हैं, इसलिए इसे सुराणाओं का हवामहल भी कहते हैं।

- **मन्त्रियों की मोटी हवेली-** चुरू

- **रामविलास गोयनका की हवेली-** चुरू
- **मालजी का कमरा** -चुरू

  इसका निर्माण मालजी कोठारी ने करवाया था ।
- **कन्हैयालाल बागला की हवेली-** चुरू

  1880 ई. में निर्मित है। इसमें बेजोड़ जालीदार काम व प्रेम आधारित लोक आख्यानों का चित्रण है।
- **नाहटों की हवेली-** सरदारशहर (चुरू)
- **दानचंद चौपड़ा की हवेली-** सुजानगढ़ (चुरू)

मामा भान्जा की छतरी	मेहरानगढ़ (जोधपुर)
मामा भान्जा की दरगाह	भटनेर दुर्ग, हनुमानगढ़
मामा भान्जा का मंदिर	फूलदेवरा (अटरू, बारां)
मामा देव कुण्ड व मामादेव मंदिर	कुम्भलगढ़ किला (राजसमंद)
मामजी के घोड़े	हरजी गाँव (जालौर) में बनाये जाते हैं।
मामा देव	बरसात के देवता हैं, इनके पूजा स्थल पर मूर्ति के स्थान पर लकड़ी का तोरण होता है।
तीर्थों का मामा	पुष्कर (अजमेर)

राजस्थान की छतरियाँ

- पूर्वजों की मृत्यु के बाद उनके स्मृति चिह्न बनाने की परम्परा बहुत पुरानी है। राजस्थान का शासक वर्ग, सामंत, जागीरदार और धनिक वर्ग काफी सम्पन्न था अतः उनकी मृत्यु के बाद उनकी याद में स्थापत्य की दृष्टि से विशिष्ट स्मारक बनाये गये, जिन्हें छतरियाँ और देवल के नाम से जाना जाता है।

उदयपुर संभाग की छतरियाँ-

❑ **आहड़ की छतरियाँ / महासतियाँ-** आहड़ (उदयपुर)

- यहाँ मेवाड़ के महाराणाओं की छतरियाँ बनी हैं, इनमें से महाराणा अमरसिंह प्रथम की छतरी सर्वाधिक पुरानी है।

❑ **महाराणा उदयसिंह की छतरी -** गोगुन्दा (उदयपुर)

- **महाराणा प्रताप की छतरी-** बाण्डोली (चावंड, उदयपुर) महाराणा प्रताप की 8 खम्भों की छतरी चावंड के निकट बांडोली गाँव में केजड़ बांध की पाल पर बनी है। इसका निर्माण अमरसिंह प्रथम ने करवाया था।

❑ **गफूर बाबा की मजार / छतरी-** उदयपुर

- इसका निर्माण शाहजहाँ ने गफूर बाबा के सम्मान में जगमंदिर के समीप करवाया था।

❑ **नटनी का चबूतरा -** पिछोला झील (उदयपुर)

- **संत रैदास की छतरी-** चित्तौड़गढ़
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में बने मीरां मंदिर के सामने मीरां के गुरु रैदास की 4 खम्भों की छतरी बनी है।

❑ जयमल राठौड़ की छतरी - चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के दौरान किले की रक्षा का भार जयमल राठौड़ पर ही था। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में हनुमानपोल व भैरवपोल के मध्य लाल पत्थरों से इनकी 6 खम्भों की छतरी बनी है।

❑ कल्ला राठौड़ की छतरी- चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- लोकदेवता के रूप में पूजे जाने वाले कल्ला जी राठौड़ की छतरी भी चित्तौड़गढ़ दुर्ग में हनुमानपोल व भैरवपोल के मध्य लाल पत्थरों से 4 खम्भों पर बनी है।

पत्ता सिसोदिया की छतरी- चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के मुख्य प्रवेश द्वार **रामपोल** के अंदर चित्तौड़ के तीसरे साके में आमेट (राजसमंद) के फतेहसिंह सिसोदिया को अकबर के विरूद्ध युद्ध में पागल हाथी ने सूंड में उठाकर पटक दिया था जिससे उनकी मृत्यु हो गयी थी, यहीं पर रामपोल के पास ही इनकी छतरी बनी है।
- **श्रृंगार चंवरी-** चित्तौड़गढ़ दुर्ग

  मूलत: शांतिनाथ जैन मंदिर में 4 खभो की छतरी बनी है, जिसमें महाराणा कुम्भा की पुत्री के विवाह की चंवरी बनी है।मूलत: शांतिनाथ जैन मंदिर में 4 खभो की छतरी बनी है, जिसमें महाराणा कुम्भा की पुत्री के विवाह की चंवरी बनी है।

राजस्थान की छतरियाँ

- **रावत की 8 छतरियाँ-** बेगूं (चित्तौड़गढ़)
- **उड़ना पृथ्वीराज की छतरी-** कुंभलगढ दुर्ग (राजसमंद) महाराणा रायमल के पुत्र कुंवर पृथ्वीराज की 12 खम्भों की छतरी कुंभलगढ़ दुर्ग में बनी है. इस छतरी के वास्तुकार धणषपना हैं।
- **चेटक की छतरी -**वलीचा गाँव (राजसमंद)

कोटा संभाग की छतरियाँ

- **84 खम्भों की छतरी -** देवपुरा गाँव (बूंदी)
- इसका निर्माण राव राजा अनिरूद्ध सिंह के काल में राव देवा द्वारा 1683 ई. से 1695 ई. के मध्य करवाया गया था। यह छतरी तीन मंजिला बनी है मुख्यतः शिव उपासना के लिए निर्मित है। इस छतरी के अन्दर विभिन्न प्रकार के चित्र उकेरे गये हैं जिसमें मुख्य रूप से पशु पक्षियों के चित्र हैं। छतरी पर कामसूत्र ग्रन्थ आधारित चित्र भी बने है।

राजस्थान की छतरियाँ

- **केसरबाग की छतरियाँ-** केसरबाग (बूंदी)
  - बूँदी से 4-5 किमी दूर केसरबाग में बूँदी के शासकों व राजपरिवार की 66 छतरियाँ बनी हैं। जिनमें सबसे प्राचीन छतरी राव दुदा की तथा सबसे नवीन छतरी महाराव राजा विष्णुसिंह की है।
- **घास फूस की छतरी-** बूँदी
- **क्षारबाग की छतरियाँ-** कोटा
  - यहाँ कोटा के हाड़ा शासकों की छतरियाँ हैं।

- **संत पीपा की छतरी-** गागरोन (झालावाड़)
- **थानेदार नाथसिंह की छतरी -** शाहबाद (बारां)

1932 ई. में डाकुओं से मुकाबला करते हुए शहीद हुये थे. इस छतरी का निर्माण कोटा महाराव उम्मेदसिंह ने करवाया था।* संत पीपा की छतरी गागरोन (झालावाड़)

भरतपुर संभाग की छतरियाँ

- **खाण्डेराव होल्कर की छतरी -** गागर सौली (भरतपुर)
- **अकबरी छतरी -** बयाना (भरतपुर)
  - बयाना दुर्ग के समीप बनी है। अकबर के शासनकाल में गुजरात विजय के बाद बनाई गई थी।
- **32 खम्भों की छतरी-** रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर)
- इसका निर्माण हम्मीर देव चौहान ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षों के शासनकाल की स्मृति में धौलपुर के लाल पत्थरों से 32 खम्भों पर करवाया था। इसे जैत्रसिंह की छतरी / न्याय की छतरी भी कहते हैं। रणथम्भौर किले में बनी होने के कारण इसे रणथम्भौर की छतरी भी कहते हैं।

राजस्थान की छतरियाँ

- **नटणी की छतरी -** सवाईमाधोपुर
- **कुत्ते की छतरी-** रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) रणथम्भौर अभयारण्य में कुक्कुर घाटी में स्थित है
- **एक खम्भे की छतरी -** सवाईमाधोपुर ॐ राव गोपालसिंह की छतरी- करौली
- **बोहरा भगत की छतरी -** करौली कैलादेवी मंदिर के पास बनी है।

जयपुर संभाग की छतरियाँ

- **गैटोर की छतरियाँ-** जयपुर नाहरगढ़ दुर्ग की तलहटी में बना यह जयपुर के शासकों का निजी शमशान घाट है, जिसमें महाराजा सवाई जयसिंह से लेकर महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय तक के राजाओं और उनके पुत्रों की स्मृति में बनी छतरियाँ है। इनमें सबसे कलात्मक छतरी सवाई जयसिंह द्वितीय की है, जिसकी एक अनुकृति लंदन के केनसिंगल म्यूजियम में भी रखी गयी है।

राजस्थान की छतरियाँ

- **सवाई ईश्वरी सिंह की छतरी-** जयनिवास उद्यान (जयपुर) सिटी पैलेस परिसर में जयनिवास उद्यान में सवाई माधोसिंह प्रथम ने सवाई ईश्वरी सिंह की स्मृति में यह बनवाई थी।
- **राजा मानसिंह प्रथम की छतरी -** हाड़ीपुरा गाँव (आमेर) आमेर के राजा मानसिंह प्रथम की छतरी है जो आमेर से 2 किमी दूरी पर स्थित हाड़ीपुरा में बनी है इस छतरी पर बने चित्र जहाँगीरकालीन हैं।
- **गुसाईंयों की छतरियां-** मेड गाँव, विराटनगर (जयपुर) • यहाँ 16वीं व 18वीं शताब्दी की बनी 3 छतरियाँ है।

- **80 खम्भों की छतरी मूसी महारानी की छतरी-** अलवर यह अलवर दुर्ग के पास बनी है इसका निर्माण महाराजा विनयसिंह ने 1815 ई. में मूसी महारानी (महाराजा बख्तावर सिंह की रानी) की स्मृति में करवाया था। यह दो मंजिला छतरी है। जिसकी पहली मंजिल लाल पत्थर से व दूसरी मंजिल सफेद संगमरमर से बनी है। दूसरी मंजिल के भीतरी तरफ रामायण और महाभारत के भित्ति चित्र बने हैं। इसके पास 'सागरताल' जलाशय बना है।

राजस्थान की छतरियाँ

- **टहला की छतरियाँ-** सरिस्का (अलवर)
- सरिस्का अभयारण्य क्षेत्र में इन छतरियों पर दशावतार का चित्रण किया गया है जिन पर काले और कत्थई वानस्पतिक रंगो का प्रयोग किया गया है। इनमें मिश्रा जी की छतरी 8 खम्भों की छतरी प्रसिद्ध है।
- **नैड़ा की छतरी** - अलवर
- **फतेहगुम्बद छतरी** - अलवर
- **बन्जारों की छतरी** - लालसोट (दौसा)
- माना जाता है कि यहाँ प्राचीन बौद्ध स्तूप थे, जिनके स्तम्भ बंजारों की छतरियों में लगे हुए हैं।

राजस्थान की छतरियाँ

- छठी शताब्दी में निर्मित है. इसे 6 खम्भों की छतरी भी कहा जाता है।

❑ **जोगीदास की छतरी -** उदयपुरवाटी (झुंझुनूं)

- शेखावाटी शैली के प्राचीनतम भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है इसका चित्रकार देवा नामक एक चित्रकार था।

❑ **राव शेखा की छतरी-** परशरामपुरा (झुंझुनूं)

❑ **रामदत्त गोयनका की छतरी-** डुन्डलोद (झुंझुनूं) 1888 ई. में निर्मित है।

❑ **सेठ रामगोपाल पोहार की छतरी-** रामगढ़ (सीकर) यह शेखावाटी क्षेत्र की सबसे बड़ी छतरी है।

❑ **चाँदसिंह की छतरी-** गनेड़ी (सीकर)

अजमेर संभाग की छतरियाँ

❑ **दाहरसेन स्मारक - अजमेर**

- नाग पहाड़ी के मध्य 1997 में अजमेर यूआईटी द्वारा सिंधुपति महाराजा दाहरसेन का स्मारक बनवाया गया है।

❑ **आंतेड़ की छतरियाँ - अजमेर**

- दिगम्बर जैन सम्प्रदाय की छतरियाँ हैं।

❑ अमरसिंह राठौड़ की छतरी - नागौर

- नागौर दुर्ग में अमरसिंह राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी बनी है।

राजस्थान की छतरियाँ

- **लाछा गुजरी की छतरी -** नागौर
- **जव्यपा सिंधिया की छतरी -** ताऊसर (नागौर)
- **जगन्नाथ कछवाहा की छतरी -** मांडल (भीलवाड़ा)
  - आमेर के जगन्नाथ कछवाहा की समाधि पर राजनगर के सफेद संगमरमर से 32 खंभो की विशाल छतरी बनी है जिसमें एक ही पत्थर से बना 5 फिट का शिवलिंग है यह छतरी हिन्दू और मुस्लिम स्थापत्य का अनूठा उदाहरण है।
- **गंगाबाई की छतरी-** गंगापुर (भीलवाड़ा)
  - महादजी सिंधिया की पत्नी गंगाबाई उदयपुर से आ रही थी तो गंगापुर में उनकी मृत्यु हो गयी थी, उन्हीं की स्मृति में यह छतरी बनी है। इसका निर्माण महादजी सिंधिया ने करवाया था।

राजस्थान की छतरियाँ

- **राणा सांगा की छतरी -** मांडलगढ़ (भीलवाड़ा)
  - मेवाड़ के महाराणा सांगा की 8 खंभो की छतरी है। इसके निर्माता जगनेर (भरतपुर) के अशोक परमार हैं।
- **जोधसिंह की छतरी-** बदनोर (भीलवाड़ा)
  - 32 खम्भों पर निर्मित है।
- **अमरगढ़ की छतरियाँ-** बागोर (भीलवाड़ा)
- **बदनौर की छतरियाँ-** भीलवाड़ा
- **रसिया को छतरी-** टोंक

जोधपुर संभाग की छतरियाँ

❑ जसवंत थड़ा - जोधपुर

- इसका निर्माण महाराजा सरदारसिंह ने अपने पिता जसवंतसिंह द्वितीय की स्मृति में 1906 में करवाया था। मेहरानगढ़ किले की तलहटी में एक पहाड़ी पर बना है। इसमें जोधपुर नरेश की वंशावली के मनोहर चित्र लगे हैं।
- इसे राजस्थान का ताजमहल कहा जाता है।
- जसवंत थड़ा के पास ही सुमेर सिंह, सरदार सिंह, महाराजा उम्मेद सिंह व महाराजा हनुवन्त सिंह की छतरियाँ बनी हैं।

- **मामा भान्जा की छतरी-** ये धन्ना गहलोत और भीया चौहान नामक वीरों की छतरी है, जो आपस में मामा-भान्जा थे। इन्होने जोधपुर नरेश अजीतसिंह के प्रधानमंत्री एवं अपने स्वामी मुकुंद चंपावत की हत्या का बदला ठाकुर प्रतापसिंह उदावत से लेकर स्वामीभक्ति का परिचय दिया तथा अपना आत्मबलिदान दिया था। उनकी स्मृति में महाराजा अजीतसिंह ने इस 10 खम्भों की छतरी का निर्माण मेहरानगढ़ दुर्ग में लोहापोल के पास करवाया था।

- **कीरतसिंह सोढ़ा की छतरी -** जोधपुर दुर्ग के भीतर जयपोल के पास जसोल ठाकुर के प्रधान पुत्र कीरतसिंह सोढ़ा की छतरी का निर्माण राजा मानसिंह ने करवाया था। इसे 'करोड़ों के कीर्ति 'धणी की छतरी' के नाम से भी जाना जाता है।
- **सेनापति की छतरी-** जोधपुर में नागौरी गेट के पास स्थित यह छतरी जोधपुर नरेश मानसिंह के सेनापति इन्द्रराज की है। गोरा धाय की छतरियाँ- जोधपुर के पुराने स्टेडियम के पास दो छतरियाँ बनी है जिनमें से एक 6 स्तम्भ की है व दूसरी 4 स्तम्भों की है जिनका निर्माण अजीतसिंह ने धायमाता गोराधाय की स्मृति में करवाया था।

- **गोरा धाय-** मण्डोर के मनोहर गोपी गहलोत की धर्मपत्नी गोरा टांक ने अपने पुत्र का बलिदान कर मेहतरनी का स्वांग कर मारवाड़ के बाल महाराजा अजीतसिंह को सन् 1679 ई. में दिल्ली के शाही पहरे से बचाया था। गोरा का जन्म 4 जून 1646 ई. को हुआ व स्वर्गवास 20 मई 1704 ई. को हुआ। इन्हें 'मारवाड़ की पन्नाधाय' कहा जाता है।

- **जोधपुर के राजाओं के देवल - मंडोर (जोधपुर)**

  मंडोर बाग में स्थित राजाओं के स्मारक देवल के नाम से प्रसिद्ध है, यहाँ पर जसवंत सिंह द्वितीय से पूर्व के शासकों की छतरियाँ बनी हैं। यहाँ सबसे बड़ी व सबसे सुन्दर छतरी महाराजा अजीत सिंह की है। मंडोर में राजाओं के अलावा भी कुछ छतरियाँ बनी हैं, जो मंडोर की छतरियाँ कहलाती हैं। मंडोर में ही पंचकुण्ड नामक स्थान पर राव चूण्डा, राव रणमल, राव जोधा व राव गांगा की छतरियाँ है। इनमें से सबसे प्राचीन छतरी राव गांगा की है।

राजस्थान की छतरियाँ

- राव मालदेव के समय मारवाड़ के शासकों की छतरियाँ पंचकुण्ड
- की बजाय मंडोर में बनने लगी।
- इसी स्थान पर बनी अन्य छतरियों में निम्न प्रमुख हैं-
- **पंचकुंड की छतरियां-** मंडोर (जोधपुर)
- मंडोर के पास पंचकुंड नामक स्थान पर जोधपुर की रानियों की 45 छतरियाँ बनी है जिसमें रानी सूर्य कंवरी की 32 खंभों की छतरी सबसे बड़ी है। महाराजा मानसिंह की भटियाणी रानी की छतरी भी है।
- **ब्राह्मण देवता की छतरी-** मेहरानगढ़ दुर्ग के तांत्रिक अनुष्ठान में जिस ब्राह्मण ने आत्म बलिदान दिया. उसकी छतरी मंडोर के पंचकुड के निकट स्थित है।

राजस्थान की छतरियाँ

- **कागा की छतरियों -** जोधपुर से 5 किमी दूर ऋषि का भुशुंडी की तपोभूमि जहाँ ऋषि के तप से भगवती गंगा प्रकट हुई थी। कागा की छतरियों में जोधपुर नरेश विजयसिंह द्वारा निर्मित। शीतला देवी का मंदिर है।
- प्रधानमंत्री की छतरी - जोधपुर
- महाराजा जसवंत सिंह की प्राण रक्षा हेतु उनके प्रधानमंत्री राजसिंह कुंपावत ने आत्मबलिदान दिया था. उनकी स्मृति में कागा को छतरियों में यह छतरी बनवाई गई थी। लाल पत्थरों से बनी 18 खम्भों को छतरी है।
- **दीवान दीपचंद की छतरी -** जोधपुर
- यह छतरी कागा की छतरियों में शीतला माता मंदिर के पास बनी है।

❑ बख्तावर सिंह की छतरी - मंडोर (जोधपुर)

- अलवर के महाराजा बख्तावर सिंह जयपुर के नरेश जगतसिंह के साथ जोधपुर के शासक मानसिंह से युद्ध करने गये थे, जहाँ पर वीरगति को प्राप्त हो गये थे, उन्हीं की याद में मंडोर में यह छतरी बनी है।
- नोट- बख्तावर सिंह की एक अन्य छतरी अलवर में भी है।
- 20 खम्भों की छतरी सिंघवियों की छतरी जोधपुर
- जोधपुर शासक भीमसिंह के सेनापति अखैराज सिंघवी को छतरी है।

राजस्थान की छतरियाँ

- ❑ **अहाड़ा हिंगोला की छतरी-** जोधपुर
- ❑ **जैसलमेर की रानी की छतरी-** जोधपुर
- ❑ **महामंदिर छतरी -** जोधपुर
- ❑ **आसकरण राठौड़ की छतरी-** सालवा (जोधपुर)
  - वीर दुर्गादास राठौड़ के पिता आसकरण की छतरी है।
- ❑ **बड़ा बाग की छतरियों-** जैसलमेर
  - यहाँ जैसलमेर के भाटी शासकों की छतरियाँ हैं। यहाँ पर क्षेत्रपाल जी का मंदिर भी बना है। महारावल जैतसिंह ने यहाँ 1528 ई. में जैतसर सरोवर तथा बड़ा बाग का निर्माण करवाया।
  - महारावल जैतसिंह की छतरी भी यहीं बनी है जिसमें महारावल सोढ़ी रानी, ऊँट तथा 10 पासवानों को हाथ जोड़े जमीन पर खड़े दिखाया गया है।

राजस्थान की छतरियाँ

- **पालीवालों की छतरी** - जैसलमेर
- **मूमल की मेढ़ी**- लोद्रवा (जैसलमेर) काक नदी के किनारे स्थित है।
- **राव चन्द्रसेन की छतरी** - सारण की पहाड़ियाँ (पाली)
- **महाराव मानसिंह की छतरी** - अचलगढ़ (सिरोही)

बीकानेर संभाग की छतरियाँ

❑ देवीकुंड सागर छतरियाँ - बीकानेर

- बीकानेर से 5 किमी दूर देवीकुंड सागर के पास बीकानेर के शासकों का निजी शमशान घाट है यहाँ राव जैतसिंह के समय से राजाओं, रानियों, पासवानों और उनकी संतानों की छतरियाँ बनी है। इनमें से सबसे पुरानी छतरी राव कल्याणमल की है जो जैसलमेरी पत्थर से बनी है।
- रायसिंह व सूरसिंह की छतरियाँ **लाल पत्थर** से बनी है।
- सबसे बड़ी और सुन्दर छतरियाँ राजा करण सिंह और अनूपसिंह की है। राव बीकाजी व महाराजा रायसिंह की छतरियाँ भी हैं।

राजस्थान की छतरियाँ

- **महाराजा गंगासिंह व सार्दुलसिंह की छतरियाँ-** बीकानेर राव कल्याणमल की छतरी- बीकानेर
- **तेस्सितोरी की छतरी-** बीकानेर
- **साधु गिरिधापति की छतरी-** कोलायत (बीकानेर)
- **राव जैतसी की छतरी-** हनुमानग

अन्य छतरियाँ

- **दुर्गादास की छतरी-** रामपुरा (मध्यप्रदेश)
- **पृथ्वीराज तृत्तीय की छतरी-** गजनी (अफगानिस्तान)
- **नोट-** मारवाड़ क्षेत्र में गौ रक्षार्थ बलिदान देने वाले वीर पुरूषों की समाधि स्थल को गोवर्धन कहते है। मारवाड़ क्षेत्र में गोवर्धन की काफी छतरियाँ बनी हैं क्योंकि इनमें कृष्ण गोवर्धन धारण किये बने होते हैं।
- यह समाधि स्थल भगवान कृष्ण के पर्यायवाची है क्योंकि भगवान कृष्ण भी गोपालक थे और इन वीर पुरूषों ने भी गौ रक्षा की।

अन्य छतरियाँ

- मपुरा (मध्यप्रदेश)
- **पृथ्वीराज तृत्तीय की छतरी-** गजनी (अफगानिस्तान)
- **नोट-** मारवाड़ क्षेत्र में गौ रक्षार्थ बलिदान देने वाले वीर पुरूषों की समाधि स्थल को गोवर्धन कहते है। मारवाड़ क्षेत्र में गोवर्धन की काफी छतरियाँ बनी हैं क्योंकि इनमें कृष्ण गोवर्धन धारण किये बने होते हैं।
- यह समाधि स्थल भगवान कृष्ण के पर्यायवाची है क्योंकि भगवान कृष्ण भी गोपालक थे और इन वीर पुरूषों ने भी गौ रक्षा की।

Thank You.....

Like & Share

Click the Icon to Connect with Us ....

Call Now to Connect with Our Support Team

info@class24.study +91-7849841445, +91-8302972601 , +91-7877518210

Welcome to Class24

SSC | Railways | NEET | RAS | IIT - JEE

Teaching Exams | School Pre-Foundation | Rajasthan Exams

RAS PRE-2023 Special Batch

RAS से बने RAS

Call for enquiry: 7849841445, 8302972601, 7877518210

RAS PRE-2023 Special Batch

Course Features

- कम्पलीट कोर्स कवर
- Doubt Session
- लाइव और रिकार्डेड लेक्टर्स
- प्रिंटेबल PDFs
- गाइडेंस प्रोग्राम

TEST SERIES

RAS से बने RAS

Course Fee: ~~₹ 4999/-~~ ₹ 2999/-

Starts From 10th April

Call for enquiry: 7849841445, 8302972601, 7877518210

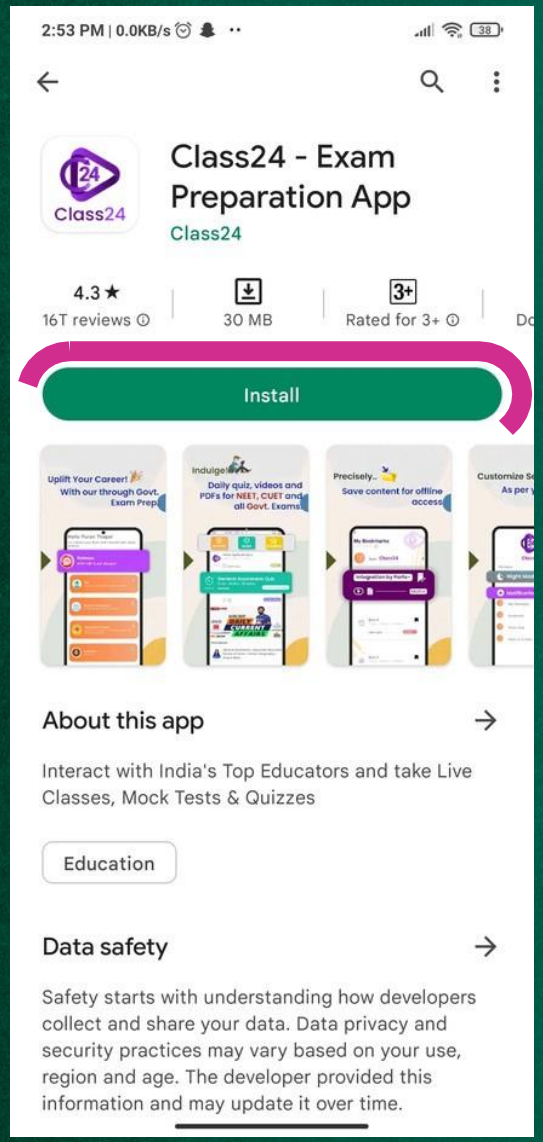

STEP 1

STEP 2

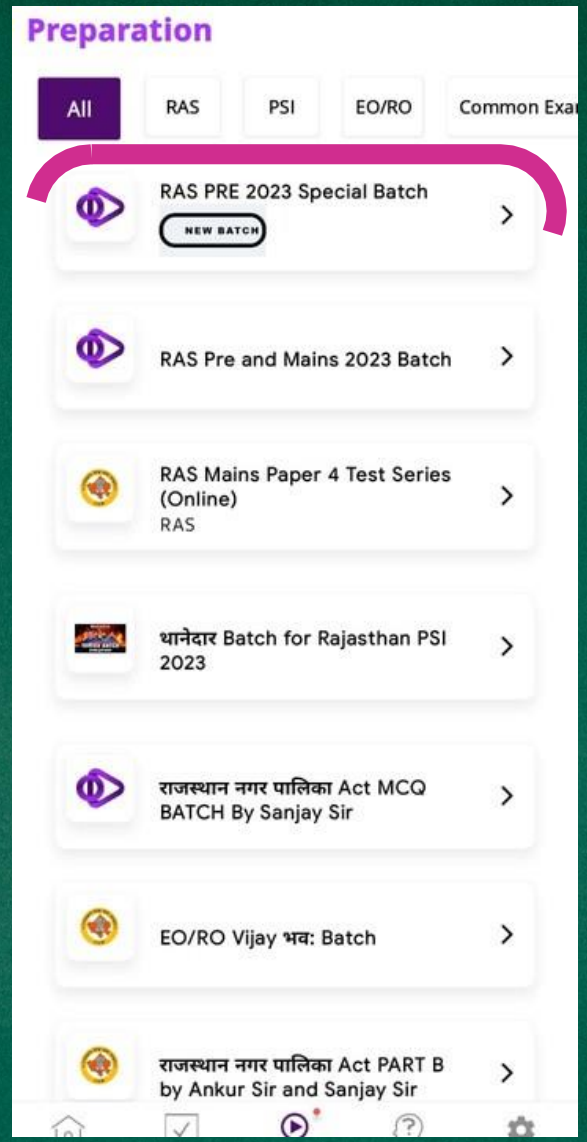

STEP 3

STEP 4

राजस्थान के महल, पैलेस एवं स्मारक

- महल व पैलेस का निर्माण स्थापत्य का ही एक विशिष्ट रूप है। राजपूताना की विभिन्न रियासतों के शासकों ने अपने निवास आदि के लिए राजभवनों का निर्माण करवाया था।
- इन रिसासतों की प्राचीन राजधानियों जैसे नागदा, मंडोर, मेनाल, आमेर, चावण्ड आदि स्थानों पर पूर्व मध्यकाल के राजभवनों के अवशेष मिलते हैं, जिनमें छोटे-छोटे कमरे, छोटे-छोटे दरवाजे, खिड़कियों का अभाव व साधारण वास्तु शिल्प के भवन इनकी विशेषता है।

- मध्यकाल में रियासतों के आर्थिक रूप से समृद्ध होने के कारण भव्य, विशाल और कलात्मक राजप्रासादों का निर्माण होने लगा। 15 वीं शताब्दी के बाद राजपूत शासकों का मुगलों से सम्पर्क के बाद यहाँ की स्थापत्य शैली पर मुगल प्रभाव नजर आने लगा। राजप्रासादों में दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, बारहदरियाँ, गवाक्ष-झरोखे, छोटे-छोटे उद्यान, फव्वारे आदि को जगह मिलने लगी।

उदयपुर सम्भाग-

- राजमहल/सिटी पैलेस- उदयपुर

- इसका निर्माण महाराणा उदयसिंह ने पिछोला झील के किनारे 1559 ई. में करवाया था। इसके एक हिस्से में प्रताप संग्रहालय संचालित है, जिसमें महाराणा प्रताप का ऐतिहासिक भाला रखा है।
- फर्ग्यूसन ने इनकी तुलना लंदन के 'विंडसर महलों' से की है। राजमहल दर्शनीय स्थल- माणक चौक, मयूर चौक, कृष्णा विलास महल, वाणी विलास महल, मोती महल, दिलखुश महल, फतेहप्रकाश महल ..... आदि।
- इसमें स्थित 'मयूर चौक' में बने 5 मयूरों का सौन्दर्य अनूठा है। यहीं 'कृष्णा विलास महल' है, जहाँ राजकुमारी कृष्णा ने जहर पीकर अपनी इहलीला समाप्त कर ली थी।

- **जगमंदिर - उदयपुर**
- यह महल पिछोला झील में स्थित है। इसका निर्माण महाराणा कर्णसिंह ने 1620 ई. में शुरू किया तथा इसे महाराणा जगतसिंह प्रथम ने 1651 ई. में पूर्ण करवाया।
- महाराजा कर्णसिंह ने इसी जगमंदिर में खुर्रम (शाहजहाँ) को शरण दी, महाराणा स्वरूप सिंह के समय 1857 की क्रांति के दौरान नीमच छावनी से भागे अंग्रेज अधिकारियों के परिवारों को भी इसी महल में शरण दी गई थी।

❖ जगनिवास - उदयपुर

- यह महल पिछोला झील के मध्य बना है। इसका निर्माण महाराणा जगतसिंह द्वितीय ने 1746 ई. में करवाया था। वर्तमान में इसमें होटल ताज लेक पैलेस संचालित है।

❖ हाड़ी रानी का महल- सलूम्बर (उदयपुर)

- हाड़ी रानी- सलूंबर के राव रतनसिंह की पत्नी और बूँदी के जागीरदार संग्राम सिंह हाड़ा की पुत्री थी। इनका मूल नाम सलह / सहल कंवर था। विवाह के दूसरे ही दिन रतनसिंह (महाराणा राजसिंह की सेना में थे) को औरंगजेब के विरूद्ध युद्ध करने जाना पड़ा। युद्ध में जाने के लिए तैयार होते समय रतनसिंह ने एक सेवक को भेज कर सहल कंवर से सैनाणी (कोई पहचान चिह्न) मांगी। हाड़ी रानी ने सेवक के साथ अपना सिर काटकर भेज दिया।
- **"चूंडावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी"** 'सैनाणी' नामक इस कविता की रचना मेघराज मुकुल ने की है।
- **विजय स्तम्भ व जैन कीर्ति स्तम्भ-** चितौड़गढ़ किला इनका विस्तृत विवरण किलों के अध्याय में चित्तौड़गढ़ किले के साथ दिया गया है।

- दिवेर का विजय स्मारक- दिवेर (राजसमंद)

- दिवेर में स्थित इस 'महाराणा प्रताप विजय स्मारक' का निर्माण राष्ट्रीय राजमार्ग 58 के पास एक ऊँची पहाड़ी पर किया गया है। स्थानीय लोग इसे 'मेवा का मथारा' कहते हैं। इसका उद्घाटन 11 जनवरी 2012 को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा किया गया।

❖ जूना महल - डूंगरपुर

- रावल वीरसिंह देव द्वारा निर्मित यह 7 मंजिला महल है। यह महल धनमाता पहाड़ी की ढ़लान पर स्थित है। अपने भित्ति चित्रों व कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध है।

❖ उदयविलास महल- डूंगरपुर

- इसका निर्माण महारावल उदयसिंह द्वारा करवाया गया था। यह महल गैपसागर झील के किनारे बना है। इसी के मध्य एक थम्बिया महल बना है।

❖ एक थम्बिया महल- डूंगरपुर

- गैपसागर झील के तट पर बने उदयविलास महल के अन्दर बना है। इसका निर्माण महारावल शिवसिंह ने राजमाता ज्ञान कुंवर की स्मृत्ति में शिव ज्ञानेश्वर शिवालय के रूप में करवाया था।

❖ बादल महल - डूंगरपुर

- यह महल गैपसागर झील के मध्य बना है, इसका निर्माण महारावल पुंजराज द्वारा करवाया गया था।

❖ मानगढ़ धाम स्मारक- मानगढ़ पहाड़ी (बाँसवाड़ा)

- बाँसवाड़ा जिले में आमलिया ग्राम पंचायत में स्थित एक पहाड़ी, जो मानगढ़ पहाड़ी के नाम से जानी जाती है।
- गोविन्द गुरु के नेतृत्त्व में अंग्रेजों से स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ते हुये यहाँ पर करीब 1500 आदिवासी शहीद हुये थे। 17 नवम्बर 1913, मार्गशीर्ष पूर्णिमा को इस पहाड़ी पर एकत्र हुये आदिवासियों को ब्रिटिश सेना ने मौत के घाट उतार दिया था। उन्हीं की स्मृत्ति में यह मानगढ़ धाम स्मारक बनाया गया है।
- इसे **'राजस्थान का जलियाँवाला बाग'** कहा जाता है।

❖ कोटा सम्भाग-

➢ जगमंदिर महल - कोटा

- यह महल कोटा के किशोर सागर तालाब के मध्य बना है। महाराव दुर्जनशाल ने अपनी सिसोदिया रानी ब्रजकंवर के लिए 1743-45 ई. में इसका निर्माण करवाया था।

➢ अबला मीणी का महल- कोटा

- कोटा के शासक राव मुकुन्दसिंह के द्वारा अपनी पासवान अबली मीणी/ अबला मीणी के लिए बनवाया था । वर्तमान में यह महल मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान में स्थित है।
- इसे हाड़ौती का ताजमहल / राजस्थान का दूसरा ताजमहल कहा जाता है, वर्तमान में खंडहर अवस्था में है।

- **अभेड़ा महल- कोटा**

- चम्बल नदी के किनारे बना है। अपने विशाल तालाब, जलकुण्ड, उद्यानों के कारण दर्शनीय है। इसका निर्माण महाराव अभयसिंह हाड़ा द्वारा करवाया गया था। इसे 'हाड़ौती का हवामहल' भी कहा जाता है।

- **सुख महल- बूँदी**

- बूँदी में जैतसागर झील के किनारे स्थित है, जिसका निर्माण 'राजा विष्णुसिंह' ने करवाया था। प्रसिद्ध अंग्रेजी उपन्यासकार रूडयार्ड किपलिंग बूँदी आने पर सुखमहल में ही ठहरे थे।

- **काठ का रैन बसेरा महल- झालावाड़ (काष्ठ प्रासाद)**

- लकड़ी का बना यह भवन 1936 ई. में लखनऊ में लगी एक उद्योग प्रदर्शनी में रखा गया था, झालावाड़ के तत्कालीन राजराणा राजेन्द्र सिंह इसे खरीदकर झालावाड़ ले आये और किशनसागर झील के किनारे स्थापित करवाया। यह काष्ठ प्रासाद देहरादून के वन शोध संस्थान द्वारा निर्मित है।

भरतपुर सम्भाग-

- डीग के महल - डीग (भरतपुर)

- डीग के जलमहलों का निर्माण बदनसिंह ने प्रारम्भ करवाया था, परन्तु इन जलमहलों में सर्वाधिक निर्माण महाराजा सूरजमल ने 1755-1763 ई. के मध्य करवाया हैं। राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा 10 की पुस्तक के अनुसार डीग के जलमहल जाट राजा सूरजमल द्वारा निर्मित हैं।
- बंशी पहाड़पुर के कठोर बलुआ पत्थरों से चतुष्कोणीय आकृति में बने हैं। यहाँ बने भवन गोपाल भवन, सूरज भवन, सावन भवन, भादो भवन, नंद भवन, किशन भवन, पुराना भवन, हरदेव भवन, केशव भवन।
- गोपाल भवन, किशन भवन व सूरज भवन महाराजा सूरजमल द्वारा निर्मित हैं।
- यहाँ के भवनों में सबसे बड़ा व उत्कृष्ट भवन गोपाल भवन है, जिसमें काले पत्थर का शाहजहाँ का सिंहासन रखा है। यहाँ रूपसागर और गोपालसागर नामक दो विशाल सरोवर भी बने हैं। डीग को 'जलमहलों की नगरी' कहा जाता है यह भरतपुर रियासत के शासकों की प्राचीन राजधानी भी रही है।

❖ निहाल टॉवर - धौलपुर

- यह धौलपुर शहर में बना 8 मंजिला घंटाघर है, जिसका निर्माण 1880 ई. में राजा निहालसिंह ने प्रारम्भ करवाया था, जो 1910 ई. में महाराजा रामसिंह के समय पूरा हुआ। इसे राजस्थान का सबसे बड़ा घंटाघर माना जाता है।

❖ सिटी पैलेस - धौलपुर

- **'धौलपुर महल'** भी कहलाता है। प्राचीन स्थापत्य से युक्त यह महल शाही परिवार का निवास स्थान था।

❖ तालाब शाही महल- धौलपुर

- यह महल धौलपुर में बसेड़ी के निकट स्थित तालाब शाही झील के मध्य बना है इसका निर्माण सम्राट जहाँगीर के शहजादे शाहजहाँ के लिए उसके मनसबदार साले / सलेह खाँ ने 1622 ई. में करवाया था।

जयपुर सम्भाग-

- **हवामहल जयपुर (Palace of Winds)**

- जयपुर शहर में बड़ी चौपड़ के पास स्थित इस हवामहल का निर्माण 1799 ई. में जयपुर शासक सवाई प्रतापसिंह ने करवाया था। लाल व गुलाबी बलुआ पत्थरों से निर्मित यह भवन 'भगवान कृष्ण के मुकुट के समान' नजर आता है।
- इसमें कुल 953 खिड़कियाँ हैं। इसके कारीगर/ वास्तुकार लालचंद उस्ताद थे। यह हवामहल पाँच मंजिला है, जिसकी मंजिलों का क्रम शरद मंदिर (भूतल), रत्नमंदिर (प्रथम मंजिल), विचित्र मंदिर, प्रकाश मंदिर, हवा मंदिर है। इस भवन के पिछले हिस्से में राजकीय संग्रहालय संचालित है इस संग्रहालय का आंतरिक प्रवेश द्वार 'आनन्द पोल' कहलाता है।

- यह इमारत दुनियाँ में किसी भी नींव के बिना बनी सबसे ऊँची इमारत है। हवामहल की खिड़कियों को जालीदार बनाने के पीछे मकसद यह था कि राजपरिवार की महिलाएँ इस महल की खिड़की से ही उत्सव समारोह व शाही सवारियों को देख सकें।
- इस महल की सुन्दरता के बारे में एडविन आर्नोल्ड ने लिखा है कि "अलादीन का जादूगर इससे अधिक मोहक निवास स्थान की सृष्टि नहीं कर सकता था और न ही पेरी बेनान का रजत मुक्ता महल इससे अधिक सुरम्य रहा होगा।"

❖ सिटी पैलेस - जयपुर

- जयपुर के इस सिटी पैलेस का निर्माण सवाई जयसिंह द्वारा 1729 ई. से 1732 ई. के मध्य करवाया गया था। सिटी पैलेस में अनेक इमारतें बनी हैं इसमें राजपरिवार का निवास स्थान भी बना हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार है-
- इसके अन्दर चन्द्रमहल, सिलहखाना (शस्त्रागार), दीवान-ए-आम (सभा निवास), दीवान-ए-खास, मुबारक महल, पोथी खाना (महाराजा का निजी पुस्तकालय), गोविन्द देव जी मंदिर, महाराजा मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, प्रीतम निवास चौक सर्वतोभद्र चौक स्थित हैं। सिटी पैलेस के 3 प्रवेश द्वार हैं।

- **त्रिपोलिया गेट-** सिटी पैलेस का मुख्य प्रवेश द्वार है, जो शाही परिवार के लिए आरक्षित है।

❖ **अन्य द्वार - विरेन्द्र पोल व उदयपोल (सिरह ड्योढी)**

- सिटी पैलेस की भवन शैली राजपूत, मूगल और यूरोपीय शैली का मिश्रण है। लाल और गुलाबी रंग के बलुआ पत्थरों से निर्मित इस भवन की इमारतों में पत्थर पर बारीक कटाई और दीवारों पर आकर्षक चित्रकारी की गई है। सिटी पैलेस के प्रमुख भवनों का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है-

❖ **चन्द्रमहल- सिटी पैलेस (जयपुर)**

- सवाई जयसिंह द्वितीय ने राजपरिवार के निवास के रूप में इसका निर्माण करवाया था। यह भवन 7 मंजिला है। जिनके नाम चन्द्र मंदिर सुख निवास, रंग मंदिर, शोभा निवास, छवि निवास, श्रीनिवास, साखी मंजिल (मुकुटमहल) हैं। इसका निर्माण वास्तुकार विद्याधर की देखरेख में हुआ था। इस भवन की साज सज्जा मानसिंह द्वितीय ने जर्मन कलाकार ए. एच. मूलर से करवाई।

- संग्रहालय- वर्तमान में चन्द्र महल में महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय म्यूजियम संचालित है। जिसमें राजस्थानी पोशाकें, मुगलों और राजपूतों के हथियारों का संग्रह प्रदर्शित हैं। तराशी हुई मूठ वाली तलवारें और मीनाकारी का जड़ाऊ काम प्रदर्शित है। इस संग्रहालय में 3000 के लगभग पेटिंग हैं।
- **दीवान-ए-खास (सर्वतोभद्र)-** यह सर्वतोभद्र चौक के मध्य बना एक मंजिला चौकोर कलात्मक भवन है। इससे राजा अपने दरबारियों व विश्वस्त अधिकारियों से मुलाकात करते थे।
- **गंगाजली-** दीवान-ए-खास में चाँदी के दो बड़े पात्र रखे हुये हैं, जो 14,000 झाड़शाही चाँदी के सिक्कों से बनाये गये हैं। महाराजा माधोसिंह द्वितीय द्वारा सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण समारोह में भाग लेने के लिए इंग्लैण्ड की यात्रा जाने के दौरान इन दोनों पात्रों में गंगाजल भरवा कर अपने साथ ले गये थे।
- यहीं पर सवाई माधोसिंह प्रथम द्वारा पहनी जाने वाली शाही पोशाक प्रदर्शित है।
- **दीवान-ए-आम (सभा निवास) -** जो सार्वजनिक दर्शकों के हॉल के रूप में काम में लिया जाता था । संगमरमर के खम्भों, प्लास्टर पर खूबसुरत चित्रकारी से युक्त है।

❖ मुबारक महल- जयपुर, (सिटी पैलेस में)

- इसका निर्माण माधोसिंह द्वितीय ने 1900 ई. में अतिथियों को ठहराने के लिए सर सैमुअल स्विंटन जैकब की देखरेख में करवाया था। यह 2 मंजिला कलात्मक भवन मुगल, राजपूत, यूरोपीय शैली में निर्मित है। इसके भूतल पर संग्रहालय व पोथीखाना के अधिकारियों की बैठक व्यवस्था तथा प्रथम मंजिल पर पोथीखाना बना है, जो राजपरिवार का निजी पुस्तकालय है।
- **सिलहखाना (आर्म्स एंड आर्मर गैलेरी)** - आमेर और जयपुर शासकों द्वारा इस्तेमाल किये गये हथियार, तलवारें, बन्दूकें, ढ़ाल व हेलमेट आदि प्रदर्शित हैं।

- प्रीतम निवास चौक- यह चौक सिटी पैलेस का अंदरूनी चौक है, जिसमें से होकर चन्द्रमहल तक पहुँचा जा सकता है। इसमें चार छोटे कलात्मक गेट बने हैं। मयूर द्वार, कमल द्वार लहरिया द्वार व गुलाब द्वार।
- मयूर द्वार (पिकॉक गेट) - यह द्वार शरद ऋतु का प्रतिनिधित्व करता है व भगवान विष्णु को समर्पित है।
- कमल द्वार (लोट्स गेट) - यह द्वार ग्रीष्म ऋतु का प्रतिनिधित्व करता है व भगवान शिव व पार्वती को समर्पित है।
- लहरिया द्वार / हरा द्वार (ग्रीन गेट)- यह द्वार बसंत ऋतु का प्रतिनिधित्व करता है व भगवान गणेश को समर्पित है।

- **गुलाब द्वार (रोज गेट)**- यह द्वार सर्दी ऋतु का प्रतिनिधित्व करता है व देवी को समर्पित है।
- मयूर प्रवेश द्वार (पिकॉक गेट) पर 1 जनवरी 2017 को 25 रुपये का डाक टिकट जारी हुआ है।
- **जयनिवास उद्यान**- चन्द्रमहल के सामने स्थित यह उद्यान सवाई जयसिंह द्वारा बनवाया गया था। इसी जयनिवास उद्यान के एक कोने में सवाई ईश्वरी सिंह की छतरी बनी है।
- **गोविन्द देव जी मंदिर** - जयपुर के शासकों के आराध्य देव गोविन्द देव जी का मंदिर सिटी पैलेस में ही बना है। यह गोड़ीय सम्प्रदाय का मंदिर है। इसका निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया था।
- सिटी पैलेस परिसर में 'द पैलेस स्कूल' के नाम से एक स्कूल भी संचालित है। सिटी पैलेस परिसर में एक घंटाघर भी बना है।

❖ बादल महल - जयपुर

- यह जयपुर की सबसे प्राचीन इमारत है। जयपुर नगर बसने से पहले तालकटोरा के किनारे शिकार की जो ओदी थी, इसे ही महाराजा सवाई जयसिंह ने विस्तृत और परिष्कृत कर इसे बादल महल के नाम से सम्बोधित किया।
- गणगौर तीज आदि त्योहारों के अवसर पर जयपुर के राजाओं का दरबार इसी महल में आयोजित होता था। 1876 ई. में प्रिन्स ऑफ वेल्स (अल्बर्ट) के जयपुर आगमन पर इसी महल में जयपुर की कलात्मक व दस्तकारी की वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई गई थी।

- **जन्तर मन्तर-**

- एक खगोलीय वेधशाला है, जो जयपुर में स्थित है। इसका निर्माण जयपुर शासक सवाई जयसिंह ने 1724 से 1734 ई. के मध्य सिटी पैलेस के पास करवाया था। इसमें 19 खगोलीय उपकरण लगे हैं. जो समय मापने ग्रहण की भविष्यवाणी करने, किसी तारे की गति व स्थिति जानने में सहायक हैं।
- इसके प्रमुख यंत्र - वृहत् सम्राट यंत्र लघु सम्राट यंत्र, जयप्रकाश यंत्र, ध्रुव यंत्र, दक्षिणा यंत्र, नाड़ी वलय यंत्र, राशि वलय यंत्र, दिशा यंत्र, लघु क्रान्ति यंत्र, दीर्घ क्रान्ति यंत्र, राजयंत्र, उन्नतांश यंत्र, षष्ठांश यंत्र, दिगंश यंत्र आदि है।
- जंतर मंतर में सबसे विशाल यंत्र- वृहत् सम्राट यंत्र।
- सम्राट यंत्र - यह विश्व की सबसे बड़ी सूर्य घड़ी है।
- जंतर मंतर के षष्ठांश यंत्र को बनने के बाद पहली बार आम पर्यटकों के लिए खोला गया था।

- **ध्यान रहे** - सवाई जयसिंह ने हिन्दु खगोल शास्त्र के आधार पर उज्बेकिस्तान के प्राचीन ऐतिहासिक नगर समरकन्द के शासक उलूगबेग द्वारा निर्मित वेधशाला से प्रेरणा लेकर देश भर में 5 वेधशालाओं का निर्माण करवाया था। जो क्रमशः दिल्ली (1724 ई.), जयपुर (1734 ई.), उज्जैन, बनारस, मथुरा में बनवाई थी।
- पाँचों वेधशालाओं में सबसे पहले निर्माण- दिल्ली वेधशाला
- पाँचों वेधशालाओं में सबसे बड़ी वेधशाला- जयपुर वेधशाला
- वर्तमान में केवल जयपुर व दिल्ली के जंतर मंतर ही शेष हैं बाकी नष्ट हो चुके हैं।
- जंतर का शाब्दिक अर्थ है- उपकरण / साधन।
- मंतर का अर्थ है- गणना। इस प्रकार जंतर मंतर का अर्थ हुआ गणना करने वाला उपकरण।

❖ सामोद महल - जयपुर

- यहाँ के शीशमहल, सुल्तान महल व दरबार हॉल दर्शनीय है। यहाँ पर कई फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। वर्तमान में इसे एक लग्जरी होटल में तब्दील कर दिया गया है। इसका निर्माण 1550 ई. के लगभग आमेर के शासक पृथ्वीराज कछवाहा के पुत्र रावल श्योसिंह ने करवाया था।

❖ जयपुर का परकोटा-

- 6 जुलाई 2019 को जयपुर शहर के परकोटे को यूनेस्को ने भारत के 38वें स्थान के रूप में विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया है।
- वास्तु व ज्योतिष के सिद्धान्तों पर नव ग्रहों की कल्पना के आधार पर नौ वर्ग मील में परकोटा बना है।

- बिशप हैबर ने इस परकोटे की तुलना मास्को के क्रेमलिन की दीवारों से करते हुये बहुत सुंदर बताया था। इसमें 7 दरवाजे बने हैं। जिनके नाम ध्रुव पोल, घाट गेट, न्यू गेट, सांगानेर गेट, अजमेरी गेट, चाँदपोल गेट और सूरजपोल गेट हैं। इस परकोटे का निर्माण जयपुर नगर बसाने के बाद वास्तुविद् विद्याधर की योजना के अनुसार सवाई जयसिंह ने करवाया। बाद में सवाई राम सिंह द्वितीय ने रेजीडेंट सर्जन डॉ. टी. एच. हैंडले के सुझाव पर परकोटे को गुलाबी रंग (गेरूआ रंग) से रंगवाया। (1866 से 1868 ई. के मध्य)
- युनेस्को ने अजरबेजान की राजधानी 'बाकू' में हुई विश्व धरोहर समिति की 43वीं बैठक में यह निर्णय लिया।
- ध्यान रहे - जयपुर देश का दूसरा शहर है, जो विश्व धरोहर की सूची में शामिल हुआ है इससे पहले केवल अहमदाबाद को ही यह गौरव मिला था।
- 5 फरवरी 2020 को यूनेस्को की महानिदेशक ऑड्रे अजोले द्वारा वर्ल्ड हैरिटेज सिटी का प्रमाणपत्र नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल को जयपुर में सौंपा।

❖ सिसोदिया रानी का बाग महल- जयपुर

- इसका निर्माण सवाई जयसिंह द्वितीय ने अपनी सिसोदिया रानी चन्द्र कुंवरी (महाराणा अमरसिंह द्वितीय की पुत्री) के लिए 1728 ई. में करवाया था। इसमें मुगल शैली के बगीचे, फव्वारे, बरामदे व तिबारियाँ दर्शनीय हैं।

Thank You.....

Like & Share

Click the Icon to Connect with Us ....

Call Now to Connect with Our Support Team

info@class24.study +91-7849841445, +91-8302972601 , +91-787751821

Welcome to Class24

SSC | Railways | NEET | RAS | IIT - JEE

Teaching Exams | School Pre-Foundation | Rajasthan Exams

राजस्थान के मंदिर

राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियाँ

- मंदिरों का सर्वप्रथम उल्लेख 'शतपथ ब्राह्मण' में मिलता है। भारत में मंदिर निर्माण की 3 प्रमुख शैलियाँ प्रचलित रही हैं। जो निम्न प्रकार हैं-
- नागर शैली- यह उत्तरी भारत की शैली है, जिसमें मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर बना होता है जिसे 'जगती' कहते है। मंदिर का शिखर अमालक और कलश में विभेदित होता है। मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह 'वर्गाकार' होता है। अन्य विशेषताएँ- कलश, अमालक, शिखर, अर्द्धमंडप, मंडप, महामंडप, जगती।
- हिमालय और विंध्याचल पर्वतमाला के मध्य क्षेत्र में नागर शैली के मंदिर अवस्थित है। पश्चिम में महाराष्ट्र से लेकर पूर्व में बंगाल, उड़ीसा तक तथा दक्षिण में तुगभद्रा से हिमाचल प्रदेश के चम्बा कांगड़ा तक इस शैली का विस्तार है इसका केन्द्र मध्यप्रदेश है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को ही उत्तर भारतीय आर्य शैली की संज्ञा दी है।

- **राजस्थान में नागर शैली के उदाहरण-**

  सोमेश्वर मंदिर - किराडू (बाड़मेर)

  अम्बिका मंदिर जगत (उदयपुर)

  दधिमाता मंदिर गोठ मांगलोद (नागौर)

  औसियां के मंदिर जोधपुर ।

- **द्रविड़ शैली-** यह दक्षिण भारत की शैली है, जिसमें देव मूर्ति वाले गर्भगृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं जो अलंकृत होते हैं गर्भगृह 'आयताकार' होता है मंदिर का मुख्य द्वार 'गोपुरम' कहलाता है। इन मंदिरों की छतें / शिखर 'गजपृष्ठकृत' होती हैं। इस शैली के मंदिर काफी ऊँचे होते हैं, विशाल प्रांगण बना होता है।
- इस शैली के कुछ मंदिरों में गोपुरम मुख्य मंदिर से भी ऊँचा होता है। दक्षिण भारत में द्रविड़ क्षेत्र में विशेष रूप से विकसित होने के कारण मंदिर निर्माण की यह शैली द्रविड़ शैली कहलायी। काँची, तंजौर, मदूरा, हम्पी और विजयनगर राज्यों में द्रविड़ शैली के अनेक मंदिर बने हैं।

- राजस्थान में द्रविड़ शैली के उदाहरण-
- रंगनाथ मंदिर पुष्कर (अजमेर)
  तिरूपति बालाजी का मंदिर- सुजानगढ़ (चुरू)
- वेसर शैली / चालुक्य शैली- नागर व द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप बेसर शैली है। यह भारत में सर्वाधिक प्रचलित शैली है। वेसर का शाब्दिक अर्थ 'मिश्रित' होता है।
- नागर शैली व द्रविड़ शैली के बीच का क्षेत्र जहाँ शैलियों को मिश्रित रूप काम में लिया गया वह शैली 'वेसर शैली' के नाम से जानी गई।
- इस शैली का प्रारम्भ बादामी के चालूक्यों द्वारा किया गया तथा सर्वप्रथम कर्नाटक में विकसित हुई।
- उदाहरण- चालुक्य मंदिर (कर्नाटक)
  एलोरा की गुफाएँ
  बेलूर के मंदिर

अन्य शैलियाँ-

- ❑ **पंचायतन शैली-** इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है। इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर (सूर्य, शक्ति, शिव, गणेश) होते हैं ये चारों मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते हैं। पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता था। यह नागर शैली का ही विस्तृत रूप है।
- ❑ अभी तक के ज्ञात मंदिरों में राजस्थान में पंचायत शैली का सर्वप्रथम मंदिर औसियां के हरिहर मंदिर है। (स्रोत- सुजस, पेजनं. 1111)

• राजस्थान में इस शैली के उदाहरण-

- ❑ **भंडदेवरा शिव मंदिर-** बारां
- ❑ **बूढ़ादीत सूर्य मंदिर-** कोटा
- ❑ **जगदीश मंदिर** -उदयपुर ।
- ❑ **बाडोली के शिव मंदिर** -बाडोली (रावतभाटा, चित्तौड़)
- ❑ **हरिहर मंदिर** -ओसियां (जोधपुर)

- **एकायतन शैली-** इसमें एक ही मुख्य देव का मंदिर होता है।
- **भूमिज शैली** -यह नागर शैली की उपशैली है इसमें प्रदक्षिणा पथ छता हुआ न होकर खुला होता है। भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर सेवाड़ी जैन मंदिर (पाली) है। राजस्थान में इस शैली के अन्य उदाहरण-
- **उंडेश्वर मंदिर-** बिजौलिया (भीलवाड़ा)
- **महानालेश्वर मंदिर -** मेनाल (भीलवाड़ा)
- **भण्डदेवरा मंदिर-** रामगढ़ (बारां)
- **कच्छपघात शैली-** राम के पुत्र कुश से सम्बन्धित माने जाने वाला कच्छपघात राजवंश के बारे में अनुमान किया जाता है कि युद्ध में कच्छप की भांति आक्रमण करने के कारण कच्छपघात राजवंश के रूप में अभिहित किये गये। इस राजवंश का देवालयों के निर्माण के प्रति लगाव अधिक था। इनके समय में मंदिर निर्माण की पृथक क्षेत्रीय शैली का आविर्भाव हुआ, जिसे 'कच्छपघात शैली' के नाम से जाना जाता है। यद्यपि इनके द्वारा निर्मित मंदिर नागर शैली के अन्तर्गत ही परिगणित किये जाते हैं।

- जिन मंदिरों में विशालकाय शिखर, मेरू मण्डावर स्तम्भों पर घटपल्लवों का अकन, पंचशाखा हार, जिनमें से एक सर्पों द्वारा वेष्टित हुआ हो आदि से युक्त मंदिरों को कच्छपघात शैली का माना जाता है। (स्रोत सुजस, पेज नं. 1115)
- राजस्थान में इस शैली के उदाहरण-

  शांतिनाथ जैन मंदिर- झालरापाटन (झालावाड़)

  पद्मनाभ मंदिर- झालरापाटन (झालावाड़)

उदयपुर सम्भाग के मंदिर

उदयपुर जिला

❑ **एकलिंगनाथ मंदिर-** कैलाशपुरी (उदयपुर)

- इस मंदिर का निर्माण बप्पा रावल ने 734 ई. में करवाया था। एकलिंग जी मेवाड़ के महाराणाओं के इष्टदेव/गुहिल वंश के कुल देवता हैं। यह पाशुपत सम्प्रदाय / लकुलिश सम्प्रदाय का मंदिर है। यहाँ एकलिंग जी (शिवलिंग पर चार मुख बने हैं) की काले पत्थर की चौमुखा मूर्ति स्थापित है। बाद में महाराणा मोकल ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था। इसे वर्तमान स्वरूप महाराणा रायमल ने दिया था।

- इस मंदिर के अहाते में महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित विष्णु मंदिर है, जिसे लोग 'मीरा बाई का मंदिर' भी कहते है। इस मंदिर के चारों ओर विशाल परकोटा है।
- यहाँ शिवरात्री को बड़ा मेला भरता है। यहाँ कई शिलालेख लगे हुए हैं, जिनमें सबसे प्राचीन शिलालेख विक्रम संवत् 1028 का है।

❑ **अम्बिका माता मंदिर-** जगत (उदयपुर)

- यह मंदिर **'मेवाड़ का खजुराहो'** कहलाता है। यहाँ नृत्य करते हुये गणपति की विशाल प्रतिमा स्थित है।

- मंदिर निर्माण नागर शैली में है। इसका निर्माण 10वीं शताब्दी में मेवाड़ शासक अल्लट के समय हुआ है। यहाँ 3 शिलालेख लगे हैं जिनमें से एक शिलालेख 1017 वि. संवत् का है। इस मंदिर का निर्माण गुर्जर प्रतिहार काल में हुआ है, पर इसकी शैली गुर्जर प्रतिहार शैली से भिन्न है। स्रोत राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा 10 मा. शि. बो. अजमेर, पेज नं- 76

- **ऋषभदेव मन्दिर धुलैव-** (उदयपुर)
- **अन्य नाम-** धुलैव के धनी / केसरियानाथ जी / काला-बाव जी
- 1100 खंभों से निर्मित इस मंदिर में चूने का प्रयोग नहीं है। वैष्णव धर्म के अनुयायी ऋषभदेव को विष्णु का अवतार मानते हैं। यह मंदिर धुलैव कस्बे में कोयल नदी के किनारे स्थित है। विश्व में सर्वाधिक केसर इसी मंदिर में चढ़ती है, इसलिए केसरियानाथ जी कहलाते हैं।
- इसमें भगवान ऋषभदेव की 3 फीट ऊँची पद्मासन प्रतिमा चमकीले काले रंग की है इसी कारण आदिवासी ऋषभदेव को 'कालाजी' के नाम से जानते है भील 'कालाजी की आण' को सर्वोपरि मानते हैं. इनकी शपथ लेने के बाद झूठ नहीं बोलते। मूर्ति धूला भील द्वारा लायी जाने के कारण धूलैव देव भी कहा जाता है। यहाँ चैत्र कृष्ण अष्टमी (शीतलाष्टमी) को विशाल मेला भरता है। (स्रोत सुजस, पेज नं. 1134)

- यहाँ प्रतिवर्ष आश्विन कृष्ण एकम व द्वितीया को भगवान की भव्य रथयात्रा निकलती है।
- यह भारत का एकमात्र मंदिर है, जिसमें जैन, आदिवासी, वैष्णव तथा शैव समान रूप से पूजा करते है।
- पूजा विवाद 9 जनवरी 2007 को सुप्रीम कोर्ट द्वारा पूजा का अधिकार जैनियों को देने के कारण आदिवासियों व जैन समुदाय के मध्य पूजा को लेकर विवाद हुआ था।

- **सहस्रबाहु सास बहु मंदिर -** नागदा (उदयपुर)
- उपनाम अदबद जी का मंदिर / खुमाण रावल का देवरा यहाँ 1026 ई. में गुहिल शासक श्रीधर द्वारा कुछ मंदिरों का निर्माण कराया गया था। (स्रोत राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा-10 मा. शि. बो. अजमेर)
- यहाँ दो जुड़वा वैष्णव मंदिर हैं- एक अद्वद जी का मंदिर व दूसरा खुमाण रावल का देवरा इनमें से बड़ा मंदिर दस सहायक देव मंदिरों से घिरा है वह 'सास का मंदिर' कहलाता है व छोटा मंदिर पंचायतन शैली का है, वह 'बहु का मंदिर' कहलाता है।। मंदिर का शिखर नागर शैली में निर्मित हैं।

- इस मंदिर का निर्माण गुर्जर प्रतिहार काल में हुआ है, पर इसकी शैली गुर्जर प्रतिहार शैली से भिन्न है। (स्रोत- राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा 10 मा. शि. बो. अजमेर)
- नागदा गुहिल शासकों की प्रथम राजधानी रही है, इसे इल्तुतमिश द्वारा नष्ट किये जाने पर जैत्रसिंह ने चित्तौड़गढ़ को राजधानी बनाया गया।
- **मछन्दर नाथ मंदिर-** उदयपुर
- यह मंदिर अपनी सांझियों के लिए प्रसिद्ध है इसलिए इसे 'संझ्या 'मंदिर' भी कहा जाता है।

- **जगदीश मंदिर-** उदयपुर
- इस मंदिर का निर्माण महाराणा जगतसिंह प्रथम द्वारा 1651 ई. में सिटी पैलेस के बाहर (जगदीश चौक में) एक ऊँचे चबूतरे पर करवाया था। इस मंदिर में जगन्नाथ राय की 5 फुट ऊँची काले पत्थर की मूर्ति स्थापित है। मंदिर के गर्भगृह के सामने गरूड़ की विशाल प्रतिमा स्थापित है।
- यह मंदिर पंचायतन शैली में बना है। मुख्य मंदिर के चारों कोणों में शिव, पार्वती, गणेश व सूर्य के मंदिर बने हैं।
- यह मंदिर गुगावत पंचोली कमल के पुत्र अर्जुन की देखरेख तथा सूत्रधार भाणा व उसके पुत्र मुकुंद की देखरेख में बना है। (स्रोत-सुजस पेज नं. 1126)

- **सपनों का मंदिर-** इस मंदिर के गर्भगृह में स्थित मूर्ति किसी शिल्पकार द्वारा बनाई गयी नहीं है बल्कि भगवान जगन्नाथ ने स्वप्न में प्रकट होकर महाराणा से कहा, कि मेरी मूर्ति डूंगरपुर के पास गर्वा गाँव के पीपल के पेड़ के नीचे 11 हाथ की खुदाई पर मिलेगी। इसलिए इसे 'सपनों से बना मंदिर' कहा जाता है। औरंगजेब के आक्रमण के समय इस ऐतिहासिक मंदिर को नष्ट होने से बचाने के लिए 'नारू जी बारहट' ने अपने बीस साथियों सहित बहादुरी से मुकाबला कर प्राणोत्सर्ग किए। जो इतिहास में 'बीस माचा तोड़' के नाम से प्रसिद्ध हुये।

- **गुप्तेश्वर महादेव-** उदयपुर
- उदयपुर में तीतरड़ी व एकलिंगपुरा के बीच हाड़ा पर्वत पर यह मैं शिव मंदिर स्थित हैं, इसे 'गिरवा का अमरनाथ / मेवाड़ के अमरनाथ' के नाम से भी जानते हैं।
- **आहड़ के जैन मंदिर-** आहड़ (उदयपुर)
- यहाँ 10 वीं शताब्दी के जैन मंदिरों का समूह है, यह स्थान 'तपागच्छ की उद्भव स्थली' के रूप में जाना जाता है। आचार्य जगच्चंद सुरि को यहाँ 12 वर्षों के कठोर तप के उपरान्त महाराणा जैत्रसिंह ने 'तपा' की उपाधि दी. परिणामस्वरूप जगच्चंद सूरि की शिष्य परम्परा तपागच्छ' के नाम से प्रसिद्ध हुई ।

- **जावर का विष्णु मंदिर -** जावर (उदयपुर)
- जावर माईन्स क्षेत्र में महाराणा कुम्भा की पुत्री रमाबाई द्वारा बनवाया गया पंचायतन शैली का एक विष्णु मंदिर व रमाकुण्ड स्थित है। इस मंदिर के शिल्पी 'ईश्वर' थे।
- **बोहरा गणेश मंदिर -** उदयपुर
- उदयपुर में आहड़ संग्रहालय के पीछे स्थित यह प्राचीन गणेश मंदिर महाराणा राजसिंह के समय में निर्मित है।

चित्तौड़गढ़ जिला

- **सांवलिया मन्दिर -** मंडफिया (चित्तौड़गढ़)
  - इस मंदिर में भगवान कृष्ण की काले पत्थर की प्रतिमा है इसे 'अफीम तस्करों का मंदिर' भी कहते हैं।
  - यह राजस्थान का सबसे अधिक चढावे वाला मंदिर है। जलझूलनी एकादशी पर यहाँ चाँदी के बेवाण में सांवलिया जी की भव्य सवारी निकलती है व विशाल मेला भरता है।

- **बाड़ोली शिव मंदिर-** भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़)
- यहाँ 9 छोटे बड़े मंदिरों का समूह है जिसमें से सबसे प्रमुख मंदिर 'घाटेश्वर महादेव' का है इस मंदिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में परमार राजा हूण ने करवाया था। मंदिर पंचायतन शैली में बना है स्रोत राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा 10 मा. शि. बो. अजमेर
- इस मंदिर का निर्माण गुर्जर प्रतिहार काल में हुआ है, पर इसकी शैली गुर्जर प्रतिहार शैली से भिन्न है।
- 1821 ई. में कर्नल जेम्स टॉड इस मंदिर को सर्वप्रथम प्रकाश में लाये थे। कुख्यात मूर्ति तस्कर वामन नारायण घीया ने यहाँ से नटराज की मूर्ति चुराई थी।

- **मंगलेश्वर महादेव मंदिर-** मातृकुंडिया (राश्मी, चित्तौड़गढ़) यहाँ भगवान शिव का मंदिर (मंगलेश्वर महादेव) है जो 'मेवाड़ का हरिद्वार' के नाम से भी जाना जाता है यहीं पर लक्ष्मण झूला लगा है। आमेट (राजसमंद) से होकर आने वाली चन्द्रभागा नदी यहीं पर बनास नदी में मिलती है।

❑ **कालिका माता मंदिर चित्तौड़गढ़ किला**

- यह मंदिर मूलतः सूर्य मंदिर था, जिसका निर्माण 7वीं सदी के अंत में मानभंग नामक राजा ने करवाया था। (स्रोत- सुजस, पेज नं. 805) (हालांकि निर्माता को लेकर प्रमाणिक स्रोत का अभाव है)। । यह मंदिर प्रतिहारकालीन शैली में निर्मित है। इसकी प्रतिमा को मुस्लिम आक्रांताओ ने नष्ट कर दी थी। जिसे बाद में महाराणा सज्जनसिंह ने जीर्णोद्धार करवा कर कालिका माता की मूर्ति स्थापित करवायी ।
- यह गुहिल वंश की आराध्य देवी है।

- **तुलजा भवानी मंदिर-** चित्तौड़गढ़ किला
- चितौड़ किले में प्रवेश करते ही रामपोल के पास बने इस मंदिर का निर्माण दासी पुत्र बनवीर ने अपने तुलादान के धन से करवाया था।
- **समीधेश्वर मंदिर-** चित्तौड़गढ़ किला
- अन्य नाम- त्रिभुवननारायण मंदिर / मोकल जी का मंदिर चितौड़ दुर्ग में गोमुख कुंड के किनारे नागर शैली में बना यह मंदिर परमार राजा भोज ने 1011 से 1055 ई. के बीच बनवाया था। इसमें शिव की त्रिमुखी मूर्ति स्थापित है इस मंदिर में 1150 ई. का कुमारपाल का शिलालेख लगा है। यह मंदिर परमारकालीन स्थापत्य कला (मारू गुर्जर शैली) का उदाहरण है।

- इसका पुनर्निर्माण महाराणा मोकल ने 1428 ई. में शिल्पी जैता के निर्देशन में करवाया था, तब से इसे 'मोकल जी का मंदिर' कहते हैं।

❑ कुम्भ श्याम मंदिर- चित्तौड़गढ़ किला

- माना जाता है कि यह मूलतः शिव मंदिर था, इसे बाद में वैष्णव मंदिर बनाया गया. इस मंदिर को मलेच्छों द्वारा नष्ट किये जाने के बाद महाराणा कुभा ने इसका 1449 ई. में जीर्णोद्धार करवा कर विष्णु के वराह अवतार की मूर्ति को स्थापित करवाया।
- मंदिर के मूल निर्माता के बारे में कोई प्रमाणिक जानकारी नहीं मिलती है। 8वीं शताब्दी का यह मंदिर प्रतिहारकालीन महामारू शैली में बना है।

- **मीरा बाई मन्दिर- चित्तौड़गढ़ किला**
- यह मंदिर कुंभश्याम मंदिर के पास ही उसी परिसर में बना है। इसका निर्माण महाराणा सांगा ने अपनी पुत्रवधु मीरा की भक्ति के लिए करवाया था इसी मंदिर के सामने ही रैदास की 4 खम्भों की छतरी बनी है। माना जाता है कि मीरा ने इसी मंदिर में विष है पीया था।
- **सतबीस देवरी- चित्तौड़गढ़ किला**
- चितौड़ किले में फतेहप्रकाश महल के पास 11 वीं सदी में निर्मित एक भव्य जैन मंदिर है, जिसमें 27 देवरियाँ बनी हैं। इसके मध्य एक विशाल जैन मंदिर बना है। जिनमें जैन धर्म के तीर्थंकरों की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

- **श्रृंगार चंवरी- चित्तौड़गढ़**
- इसमें राजपुत व जैन स्थापत्य कला का समन्वय है, इसके मध्य एक छोटी वेदी पर चार खंभों की छतरी बनी है ऐसा माना जाता है कि महाराणा कुंभा की पुत्री रमाबाई के विवाह की चंवरी है। लेकिन मूलतः यह शांतिनाथ का जैन मंदिर है जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छ के आचार्य जिनसेन सूरि ने की थी। इसका जीर्णोद्धार कुंभा के भंडारी बेलाक ने 1448 ई. में करवाया था।

- **नीलकंठ महादेव मंदिर- चित्तौड़गढ़ किला**
- इसके बारे में किवदंती है कि महादेव की इस मूर्ति को पांडव भीम अपने बाजुओं में बांधे रखते थे।
- **बाण माता मंदिर चित्तौड़गढ़ किला**
- यह गुहिल वंश की कुल देवी हैं।
- **अन्नपूर्णा (बिरवड़ी माता का मंदिर) चित्तौड़गढ़ किला**
- इसका निर्माण महाराणा हम्मीर ने करवाया था।
- **रतनेश्वर महादेव का मंदिर- चित्तौड़गढ़ किला**
- यह मंदिर रतनसिंह पैलेस के बाहर बना है।

- माकनगंज मंदिर बिचोर (चित्तौड़गढ़)
- यहाँ 7वीं शताब्दी के गुप्तकालीन मंदिर मिले हैं।
- निलिया महादेव मंदिर- बस्सी (चित्तौड़गढ़)
- माकनगंज मंदिर बिचोर (चित्तौड़गढ़)
- यहाँ 7वीं शताब्दी के गुप्तकालीन मंदिर मिले हैं।
- निलिया महादेव मंदिर- बस्सी (चित्तौड़गढ़)
- यह मंदिर बारिश के दिनों में गिरते झरनों, खूबसूरत चट्टानों व स वन क्षेत्र के मध्य स्थित है।

❑ राजसमंद जिला-

- **द्वारकाधीश मंदिर- काकरोली (राजसमंद)**
- यह मंदिर राजसमंद झील के पास कांकरोली कस्बे की तरफ खुलता है। वल्लभ सम्प्रदाय की 7 पीठों में से एक यह मंदिर महाराणा राजसिंह द्वारा निर्मित है। यह मूर्ति भी महाराणा राजसिंह के समय मथुरा से लायी गई थी।
- **चारभुजा मन्दिर गढ़वोर (राजसमंद)**
- यह मंदिर मेवाड़ के चार प्राचीन धामों में से एक हैं इसे 'मेवाड़ का वारीनाथ' भी कहते हैं। यह मंदिर महाराणा मोकल द्वारा निर्मित है। यहाँ होली व देवझूलनी एकादशी पर भव्य मेला भरता है।
- मेवाड़ के चार धाम कैलाशपुरी, केसरिया जी, नाथद्वारा, चारभुजा ।

❑ कुन्तेश्वर महादेव मंदिर- फरारा (राजसमंद)

- इस मंदिर के बारे में मान्यता है कि महाभारतकालीन इस मंदिर की स्थापना पाण्डवों की माता कुन्ती ने की थी।

❑ श्रीनाथ जी का मंदिर नाथद्वारा (राजसमंद)

- इसका विस्तृत विवरण मंदिर 'संत व सम्प्रदाय' के अध्याय में देखें।
- रूपनारायण जी मंदिर - सेवंत्री गाँव (राजसमंद)

- डूंगरपुर जिला-
- **बेणेश्वर धाम नवाटापरा (डूंगरपुर)**
- डूंगरपुर जिले की आसपुर तहसील के नवाटापरा में सोम, माही व जाखम नदियों के संगम स्थल पर त्रिकोण आकृति का टापू बना है। यह मंदिर उसी टापू पर स्थित है। यहाँ खण्डित शिवलिंग की पूजा होती है यहाँ 5 फीट ऊँचा एवं ऊपर से 5 स्थानों से खंडित शिवलिंग है। शिवलिंग पर सुबह केसर व शाम को भभूत का लेप होता है।
- इसे 'आदिवासियों का कुम्भ/ बागड़ का कुम्भ / बागड़ का पुष्कर' कहते हैं।

- यहाँ माघ पूर्णिमा को विशाल मेला भरता है, जो आदिवासी क्षेत्र का सबसे बड़ा मेला है। इस धाम की स्थापना संत मावजी ने 1727 ई. में की थी। इस मंदिर का निर्माण महारावल आसकरण ने करवाया था।
- बेणेश्वर मंदिर के पास ही विष्णु मंदिर बना है जिसका निर्माण विष्णु के अवतार माने जाने वाले 'मावजी' की पुत्रवधु जनक कुमारी ने 1793 ई. में करवाया था।
- माव जी के दो शिष्यों अजे और वाजे ने लक्ष्मीनारायण मंदिर का निर्माण करवाया।
- **देव सोमनाथ मन्दिर डूंगरपुर**
- सोम नदी के किनारे 12 वीं शताब्दी में बना शिव मन्दिर है। यह मंदिर बिना सीमेन्ट, चूने और मिट्टी के प्रयोग से सिर्फ सफेद पारेला पत्थरों से निर्मित है। यह मंदिर स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है इसे 'वागड़ का वैभव' कहते हैं। इसका निर्माण सोमपुरा जाति (गुजरात से आई) के कलाकारों ने किया था।

- **विजय राज राजेश्वर मंदिर- डूंगरपुर**
- डूंगरपुर में गैपसागर / गैबसागर के तट पर यह शिव मंदिर बना है। डूंगरपुर के महारावल विजयसिंह ने इसका निर्माण प्रारम्भ करवाया था, जो उनके पुत्र महारावल लक्ष्मणसिंह ने 1923 ई. में पूर्ण करवाया।
- **हरि मंदिर / संत मावजी मन्दिर साबला (डूंगरपुर)**
- भावजी को कृष्ण का निष्कलकी अवतार माना जाता है। मावजी द्वारा रचित ग्रंथ चोपड़ा यहाँ रखा हुआ है, इस पुस्तक में मावजी द्वारा की गई भविष्यवाणियाँ वर्तमान में भी सच साबित हो रहीं हैं।

- **फुलेश्वर शिवालय डूंगरपुर**
- महारावल शिवसिंह की रानी फूल कंवर द्वारा 1780 ई. में निर्मित शिव मंदिर है।
- **शिवज्ञानेश्वर शिवालय डूंगरपुर**
- महारावल शिवसिंह ने गैबसागर झील के किनारे अपनी माता की स्मृति में इस शिवज्ञानेश्वर शिवालय का निर्माण करवाया था।
- **बाँसवाड़ा जिला-**
- **घोटिया अम्बा माता मंदिर- बाँसवाड़ा**
- अम्बा माता के इस धाम में चैत्र अमावस्या को मेला भरता है, यह एक भील मेला है। मान्यता है कि पांडवों ने अपने वनवास का कुछ समय यहाँ गुजारा था। यहीं पर पाण्डवों कुन्ती व द्रोपदी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। पांडव कुंड, भीम कुंड बने हैं।

- **नदिनी माता मंदिर बड़ोदिया (बाँसवाड़ा)**
- बाड़ोदिया के निकट एक पहाड़ी पर यह प्राचीन मंदिर बना है. यहाँ पौष पूर्णिमा को मेला भरता है मंदिर में श्वेत पत्थर की अष्टभुजी प्रतिमा स्थापित है। यहाँ पर आने वाले दर्शनार्थी छोटे छोटे पत्थरों से घरोंदे भी बनाते हैं।
- मान्यता है कि नोंदिनी वही देवी है जो द्वापर युग में यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई जिसे कंस ने देवकी की आठवीं संतान समझ कर मारने का प्रयत्न किया।
- छीछ माता का मंदिर छीछ (बाँसवाड़ा)
- छींछ में ब्रह्मा मंदिर के पास ही भगवती छीछा के मंदिर का निर्माण देवीदास ने करवाया था।
- त्रिपुरा सुंदरी मंदिर तलवाड़ा (बाँसवाड़ा)
- इसका विस्तृत विवरण लोकदेवियों में देखें।
- छींछ का ब्रह्मा मंदिर- बाँसवाड़ा

- छींछ में एक तालाब के किनारे यह प्राचीन मंदिर बना है। इसमें ब्रह्मा की आदमकद चतुर्मुख प्रतिमा स्थापित है। मूर्ति की स्थापना महारावल जगमाल सिंह ने करवाई थी।
- कालिंजग जैन संठलिः कालिजग (बाँसवाड़ा)
- कालिंजरा गाँव में हरन नदी के तट पर ऋषभदेव जी का मन्दिर स्थित है।
- अर्थुना कं जैन मंदिर बॉसवाड़ा
- अर्थुना का प्राचीन नाम “उत्थुनक' था, यह स्थान पहले पर परमारों की राजधानी रहा है। अर्थुना में वागड़ के परमार शासकां द्वारा ।1वीं व 12वीं शताब्दी में निर्मित मंदिर मौजूद हैं। यहाँ पर खुदा में अनेक शिव, बैष्णव व जैनियों की टूटी मूर्तियाँ मी मिली है।
- अर्थुना के प्रमुख मंदिर- मंडलेश्वर महादेव मंदिर, नीलकंठ महादेव मंदिर, हनुमानगढ़ी मंदिर समूह, सोमनाथ मंदिर, कनफट साधुओं का मंदिर, कुम्भेश्वर मंदिर, गदाधर का मंदिर आदि।

- **मंडलेश्वर महादेव मंदिर- अर्थुना (बॉसवाड़ा)**
- यह मंदिर वागड़ के परमार राजा मंडलीक के पुत्र चामुण्डगज़ ने 1079 ई. में बनवाया। यह लक्कुलिश सम्प्रदाय का प्राचीन शिव मंदिर है। मंदिर में लगे शिलालेख से इसके निर्माता व बनने कं समय की जानकारी मिलती है।
- **मंडलीश्वर महादेव मंदिर- पाणाहेड़ा (बासवाड़ा)**
- पाणाहेडा में नागेला तालाब की पाल पर 1059 ई. में वागड के परमार शासक मंडलीक द्वारा निर्मित है।
- प्राचीन सूर्य मंदिर- तलवाड़ा (बॉसवाड़ा)

- **प्रतापगढ़ जिला-**
- **गौतमेश्वर महादेव - अरनोद (प्रतापगढ़)**
- **यहाँ वेशाख पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा) को मेला भरता है, इसे गौतम ऋषि की तपोस्थली माना जाता हे। यहाँ स्थित पवित्र कृण्ड में श्रद्धालु स्नान करते हैं।**

- **कोटा सम्भाग के मंदिर**
- **कोटा जिला-**

❑ **मथुराधीश मंदिर पाटनपोल (कोटा)**

- **कोटा शहर में स्थित यह बल्लभ सम्प्रदाय का मंदिर है। बललभ सम्प्रदाय की 7 पीठों में से एक हे। इसे खल्लभ सम्प्रदाय की प्रथम पीठ माना जाता है। इस प्रतिमा को पहले 1670 में बूँदी लाया गया, वहाँ से 1744 ई. में कोटा शासक वुर्जनशाल सिंह द्वारा कोटा लाया गया।**
- **चारचौमा शिवालय चारचौमा गाँव (कोटा)**
- **यह गुप्तकालीन शिव मंदिर है।**

- **कन्सुआ शिव मंदिर - कोटा**
- 8वों सदी से निर्मित इस गुप्तकालीन शिव मंदिर के गर्भगृह में : काले पत्थर का चतुर्भुज शिवलिंग है। जो सहस्र मुखी शिवलिंग (1008 मुखी) है। मंदिर में भरव को आदमकद मूर्ति भी विराजमान है। सूर्य की प्रथम किरण मंदिर कं 20-25 फिट भीतर स्थित शिवलिंग पर सीधी पड़ती हैं ।
- मान्यता हैं कि कण्व ऋषि का आश्रम यहीं पर था। शकुंतला ने अपना वाल्यकाल व किशोरावस्था यहीं पर व्यतीत की थी।
- यहाँ पर परिक्रमा पथ में बायीं और की दीवार पर कटिलाक्षरा लिपि में लिखा 738 ई. (8 वीं शताब्दी) का 'शिवगण मौर्य का एक शिलालेख है जिसमें इस मंदिर के निर्माण का उल्लेख किया गया है।

- **विभीषण मंदिर कंथुन (कोटा)**
- यह मंदिर तीसरी से पाँचवी शताब्दी का माना जाता है छतरी में स्थापित धड़ से ऊपर तक की विशाल मूर्ति है। (धड़ नहीं है)
- यहाँ विभीषण के शीश की पूजा राम भक्त मानकर की जाती है। माना जाता है कि यह भारत का एकमात्र विभीषण मंदिर है।
- **भीमचोरी कोटा मंदिर**
- कोटा में मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान में बना एक शिव मंदिर है, यह गुप्तकालीन शिव मंदिर है। मंदिर की परिक्रमा हेतु प्रदक्षिणा पथ है, जो राजस्थान के ज्ञात गुप्तकालीन मंदिरों में प्राच्चीनतम उदाहरण है। (स्रोत- सुजस , पेज नं. 1121)

- **बूढ़ादीत सूर्य मंदिर- बृढ़ादीत गाँव (कोटा)**
- यह पंचायतन शैली का प्राचीन मंदिर है। बूढ़ादीत का शाब्दिक अर्थ- बूढ़ा+आदित्य

- **गेपरनाथ महादेव मंदिर- कोटा**
- जमीन की सतह से 300 फूट नीचे एक गर्भ में स्थित मंदिर है। शिवलिंग पर सदैव एक जलधारा (झरना) चलती रहती है। 2009 में इस मंदिर की सीढ़ी टूट जाने से कुछ श्रद्धालुओं की मौत हो गयी थी।

- **त्रिकाल चौबीसी मंदिर- आरकेपुरम (कोटा)**
- इस मंदिर में तीनों कालों के 72 जैन तीर्थकरों की प्रतिमाएँ स्थापित हैं, इनमें से मुख्य मंदिर मुनि सुव्रतनाथ का है। माना जाता है कि उदयपुर के बाद राजस्थान का दूसरा त्रिकाल चौबीसी मंदिर हैं।

- खड़ा गणेश मंदिर- कोटा
- बूँदी जिला-
- प्राकृतिक शिव मंदिर- रामेश्वर (बूँदी)

❑ कपालएवर महादेव मंदिर/कंवलेश्वर- इन्द्रगढ़ (बूँदी)

- यह मंदिर चाकण नदी के तट पर नागर शैली में निर्मित है। इसका निर्माण चोहान शासक हम्मीर के पिता जेत्रसिंह द्वारा करवाया गया था।

❑ केशवराय जी का मंदिर- केशोरायपाटन (बूँदी)

- बूँदी के राजा छत्रसाल द्वारा 1601 ई. में निर्मित शिव मंदिर है।
- गरडिया महादेव मंदिर- डाबी गाँव (बूँदी)
- यह मंदिर बूँदी जिले को तालेड़ा तहसील की खड़ीपुरा ग्राम पंचायत में स्थित है। यह मंदिर कोटा जिले की सीमा के नजदीक
- होने के कारण अधिकांश पुस्तकें इसे कोटा जिल में मानती हैं, #
- कि गलत है।

- **बारां जिला-**
- **भरण्डदेवरा के शिव मंदिर रामगढ़ (बारा)**
- यह मंदिर पंचायतन शैली का उत्कृष्ट नमूना हैं। इस मंदिर का निर्माण मेदवंशीय 'राजा मलय वर्मा ने | 0वीं शताब्दी में किमी विजय के उपलक्ष में करवाया था। भण्डदेवरा का अर्थ होता टूटा-फूटा शिवालय। बाद में 1162 ई. में राजा त्रिशावर्मन द्वार इसका जीर्णोद्धार करवाया गया था।
- यह मंदिर 'भूमिज शैली ' मे निर्मित है। यहाँ मिथुन मुद्रा में अनेक मूर्तियाँ बनी हैं इसलिए यह मंदिर राजस्थान के मिनी खजुराहो /हाड़ौती का खजुराहो ' कहलाता है। प्रोत- राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा-10 मा. शि. वो. अजमेर

- **बांसथूनी शिवालय- बारां**
- यह खण्डित मंदिर कोटा-शाहबांद मार्ग पर स्थित है।
- मामा-भान्जा मंदिर- फूलदेवरा (अटरू, बारां)
- यह मंदिर 'मामा-भान्जा मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है। इसके निर्माण में चूने सीमेंट का प्रयोग नहीं किया गया है।
- **गड़गच्च देवालय-** अटरू (बारां)
- यह खजुराहो शैली पर आधारित 10वीं शताब्दी का मंदिर है, इसे औरंगजेब ने तोपों से तुड़वा दिया था, बाद में इसका पुनर्निमाण करवाया गया है।

- **कल्याणराय (श्रीजी) का मंदिर- बारां**
- बूँदी की राजमाता रायकूंवर बाई ने 1537 ई. में रणथम्भौर के किले से श्रीकल्याणराय की मूर्ति लाकर बारां में यह मंदिर बनवाया।
- ब्रह्मणी माता का मंदिर- सोरसन (बारां)
- **काकुनी शिव मंदिर- बारां**
- छीपाबड़ौद तहसील में परवन नदी के किनारे कई मंदिरों का समूह है, जिसमें शैव, वैष्णव व जैन मंदिर भी हैं। वर्तमान में यहाँ 9वीं-10वीं शताब्दी के 7 देवालय ऐसे हैं जिनके प्लेटफॉर्म व स्तम्भ भाग शेष है।

- **सीताबाड़ी केलवाड़ा के पास (बारां)**
- यहाँ पर सीता, लक्ष्मण के मंदिर व वाल्मिकी का मंदिर है। यह 'सहरिया जनजाति का कुंभ' माना जाता है, सहरिया लोग अपने मृतकों की अस्थियाँ यहाँ प्रवाहित करते हैं।
- मान्यता है कि भगवान राम द्वारा त्याग दिये जाने पर माता सीता यही पर आकर रही थी, यह स्थान लब-कुश की जन्मस्थली भी मानी जाती है।

- झालावाड़ जिला-

❑ शीतलेणश्वर महादंव मंदिर झालरापाटन (झालावाड)

- राजस्थान के तिथियुकत मंदिरों में यह सबसे प्राचीन मंदिर है। इसका निर्माण राजा दुर्गण के सामन्त बाप्पक ने 689 ई. में है. करवाया था। यह गुप्तकालीन शिव मंदिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है।
- सात सहेली मन्दिर- झालरापाटन (झालावाड़)

❑ अन्य नाम- पदमनाभ मंदिर-सूर्य मंदिर

- इस मंदिर में सूर्य की मूर्ति घुटनों तक जूते पहने हुए दिखाया गया है। यह मंदिर कच्छपघात शैली का है। इस पूरे मंदिर में सूर्य और विष्णु कं सम्मिलित भाव की एक प्रतिमा मण्डोवर के पीछे की मुख्य रथिका में है।
- यह मंदिर मूल रूप से 10वीं शताब्दी में बना है। यह सप्तथंगों से है युवत विशाल शिखर वाला मंदिर है। (स्रोत- सुजस, पेज नं. 1115)
- कर्नल टॉड ने इसे "चारभुजा मंदिर' कहा है।

- **चन्द्रभागा मन्दिर -** झालरापाटन (झालावाड़)
- चन्द्रभागा नदी के तट पर 7वीं शताब्दी में बना मंदिर है।
- **शान्तिनाथ जैन मंदिर झालरापाटन (झालावाड़)**
- यह कच्छपघात शैली का मंदिर है इस मंदिर के गर्भगृह में काले पत्थर की शांतिनाथ की दिगम्बर जैन प्रतिमा स्थापित है।
- चांदखेड़ी का जैन मंदिर- खानपुर (झालावाड़)
- इस प्राचीन जैन मंदिर में आदिनाथ को प्रतिमा लगी है। इसका निर्माण कोटा शासक किशोर सिंह के काल में किसी बघेरवाल जैन व्यापारी ने करवाया था।

- **नागेश्वर पाएवनाथ-** उन्हेल गाँव (झालावाड)
- जूनी जी की नसियां- झालरापाटन (झालावाड़)
- कॉलवी की गुफाएँ- झालावाड़
- झालावाड़ के डग क्षेत्र में कौल्वी , बिनायगा , हथियागौड़ व गुनई में प्राचीन बौद्ध गुफाएँ व स्तूप स्थित हैं, इन्हें राजस्थान का ऐलोरा' कहा जाता है। ये बौद्ध गुफाएँ 7वीं शताब्दी की मानी गई हैं।

- भरतपुर संभाग के मन्दिर-

❑ **भरतपुर जिला-**

- **गंगा मंदिर- भरतपुर**
- इस मंदिर का निर्माण महाराजा बलवन्त सिंह 1846 ई. में प्रारम्भ करवाया था। 12 फरवरी 1937 ई. को महाराजा ब्जेन्द्र सिंह ने इसमें गंगा की मूर्ति को स्थापित करवाया। इस प्रकार हु: मंदिर का निर्माण कार्य 90 वर्षो तक चलता रहा।
- इस मंदिर के सामने का हिस्सा मुगल शैली पर व पीछे का हिस्सा बौद्ध शैली पर आधारित है।

- **लक्ष्मण मंदिर - भरतपुर**
- भरतपुर शहर में स्थित इस मंदिर का निर्माण महाराजा बलदेव सिंह ने प्रारम्भ करवाया था, जिसे महाराजा बलवन्त सिंह ने पूरा करवाया था। ये भरतपुर के जाट राजवंश के कुल देवता हैं।
- यह बडे मंदिरों में राजस्थान का एकमात्र लक्ष्मण मंदिर है।
- **उपषा मंदिर/उपा मस्जिद -** बयाना दुर्ग (भरतपुर)
- इसका विस्तृत विवरण किलों के अध्याय में 'बयाना किले' मे देखें। '

- **धौलपुर जिला-**
- सैपऊ महादेव मंदिर सैपऊ (धौलपुर)
- धौलपुर के सैपऊ कस्बे में स्थित प्राचीन शिव मंदिर है।
- महाकालेश्वर मंदिर- सरमथुरा (धौलपुर)
- चोपड़ा शिव मंदिर- धौलपुर
- शोर शिकार गुरुद्वारा- धौलपुर
- सिक्खों के 10वें गुरु गुरु गोविन्द सिंह 1662 ई. में यहाँ ठहरे थे, उन्होंने अपनी तलवार के एक ही वार से एक दुर्दान्त शेर का शिकार किया था। उनकी स्मृति में ही यह गुरुद्वारा बना है।

करौली जिला-

- मदन मोहन मंदिर- करौली
- यह गौड़ीय सम्प्रदाय का मंदिर है, इसकी मूर्ति वुंदावन से लायी गयी थी। 1728 ई. में करोली महाराजा गोपालसिंह ने मदन मोहन जी का विग्रह जयपुर से गुसाई सबलदास जी कं माध्यम से करौली ले आये और 1748 ई. में उन्होंने वर्तमान मंदिर बनवाया था।
- श्री महावीर जी मंदिर- हिंडौन सिटी (करौली)
- इस स्थान का प्राचीन नाम चांदनपुर था, इसलिए इन्हें चांदनपुर के महावीर' के नाम से भी जाना जाता है।
- गम्भीर नदी के किनारे स्थित इस मंदिर का निर्माण अमरचन्द बिलाला_(जैन श्रावक) ने करवाया था

- इस मंदिर में जैन, मीणा, गुर्ज आदि सभी धर्म समुदाय के लोग पूजा करते है।
- चेत्र शुक्ल त्रयोदशी (महावीर जयन्ती) पर यहाँ 4 दिन का विशाल मेला भरता है। वेशाख कृष्णा प्रतिपदा के दिन यहाँ जिनेन्द्र रथ यात्रा निकलती हे इस यात्रा में यहाँ के क्षेत्रीय उपखंड अधिकारी (570) इस रथ के सारथी बनते हैं।

❑ सवाईमाधोपुर जिला

- **त्रिनेत्र गणेश मन्दिर रणथम्भौर दुर्ग** (सवाईमाधोपुर)
- यह भारत का सबसे प्राचीन गणेश मंदिर व एकमात्र त्रिनेत्र गणेश मंदिर है इस मंदिर में प्रतिमा का सिर्फ मुख है। यहाँ भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (गणेश चतुर्थी) को मेला भरता है। मंदिर के निर्माण को लेकर प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती है, इसलिए इसे चौहान शासकों द्वारा निर्मित होने का अनुमान किया जाता है।

- पूर्वी राजस्थान में मांगलिक अवसरों व विवाह का प्रथम निमंत्रण इन्हीं को भेजने की परम्परा है। यह मंदिर रणथम्भौर दुर्ग में स्थित है मंदिर के पीछे कुछ दूरी पर प्राचीन शिव मंदिर है।
- **घण्मेश्वर महाठेव मंदिर शिवाड़** (सवाईमाधोपुर)
- इसे भगवान शिव के 12वें ज्योतिर्लिंग के रूप में मान्यता दी जाती है। यह शिवलिंग सदैव जल में डूबा रहता है इस पर महमूद गजनवी ने आक्रमण किया था।
- यह राजस्थान का एकमात्र मंदिर है, जहाँ गर्भगृह में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है।

- धुँधलेश्वर मंदिर - गंगापुर सिटी (सवाईमाधोपुर)
- चमत्कार जी मंदिर- आलनपुर (सवाइमाधोपुर)
- यहाँ पर स्फटीक पाषाण से बनी ऋषभदेव जी की प्रतिमा है।
- काला गोरा भेरू - सवाई माधोपुर
- यहाँ भैरव की दो प्रतिमाएँ है काला भैरव की व गोरा भैरव की मूर्ति की स्थापना इस प्रकार है कि वह लटकती हुई प्रतीत होती हैं इसलिए इन्हें झूलता हुआ भैरू भी कहा जाता है।

जयपुर सम्भाग के मंदिर -

- **जयपुर जिला-**
- **जगत शिरोमणी मंदिर** आमेर (जयपुर)
- इस मंदिर में भगवान कृष्ण की काले पत्थर की वही मूर्ति स्थापित है जिसकी आराधना मीरां करती थी। इस मूर्ति को चितौड़ विजय के बाद मानसिंह यहाँ लाये थे। आमेर शासक मानसिंह प्रथम की महारानी कनकावती ने अपने पुत्र जगतसिंह की याद में इस भव्य कलात्मक तीन मंजिला मंदिर का निर्माण करवाया था।
- **नोट-** इस मंदिर का निर्माण 1599 में शुरू करवाया गया तथा 1608 में यह मंदिर पूर्णरूप से बनकर तैयार हुआ।

- **गोविन्द देव जी मंदिर- जयपुर**
- 'यह गौड़ीय सम्प्रदाय का मंदिर है। यह राजस्थान में गौड़ीय' सम्प्रदाय ही प्रथम पीठ है। (स्रोत- सुजस, अक्टूबर-2021) यहाँ स्थित प्रतिमा वुंदावन से लायी गयी थी। इस मंदिर का निर्माण सवाई जयसिंह ने 1735 ई. में करवाया था। बिना शिखर का मंदिर जयपुर के सिटी पैलेस परिसर में जयनिवास उद्यान में स्थित है। इस मंदिर में बना हुआ सत्संग हॉल दुनिया का सबसे बड़ा बिना खम्भों का सत्संग हॉल होने का रिकॉर्ड बना चुका है।

- मान्यता है कि भगवान श्री कृष्ण के प्रपौत्र राजा वज्रनाथ ने अपनी दादी के बताए अनुसार भगवान श्री कृष्ण के तीन विग्रहों का निर्माण करवाया था, इनमें से पहला गोविन्ददेव जी जयपुर, दूसरा गोपीनाथ जी जयपुर व तीसरा विग्रह मदन मोहन जी करौली का हैं पहले तीनों विग्रह मथुरा में ही स्थापित थे लेकिन महमूद गजनबी के भारत आक्रमण के समय विग्रह भूमि मे दबा दिये गए थे, रूप गोस्वामी को यह मूर्ति वृंदावन के गौमा टीला नामक स्थान से 1525 ई. में मिली, उसी स्थान पर छोटी सी कूटिया में इस मूर्ति को स्थापित किया। रघुनाथभदट गोस्वामी ने पूजा-पाठ की, उन्हीं के समय आमेर के मानसिह प्रथम ने 1590 ई. में वृंदाबन में गोविन्ददेव जी का भव्य मंदिर बनवा कर इसे स्थापित करवाया।

- अकबर ने गोविन्दजी की गायों के लिए चारागाह के लिए 135 बीघा भूमि भी दी थी लेकिन औरंगजेब के शासनकाल में जब, मथुरा के मंदिरों को तोड़ा गया तो गोसाई सम्प्रदाय के पुजारी इन विग्रहों को लेकर जयपुर आए। तब सवाई जयसिंह ने गोविन्ददेव जी को अपने निवास चन्द्रमहल के निकट स्थापित करवाया।

गोपीनाथ जी -जयपुर

- यह भी गौड़ीय सम्प्रदाय का मंदिर है। इनका विग्रह भी गोविन्ददेव जी के साथ ही वृंदावन से आया था। यहाँ इसे पुरानी बस्ती (जयपुर) में एक भव्य मंदिर में स्थापित कर दिया गया। इस मंदिर का निर्माण भी सवाई जयसिंह द्वारा करवाया गया था।
- संत परमानंद को यमूना किनारे बंशीवट पर यह मूर्ति मिली और उन्होंने इस प्रतिमा को निधिवन के पास विराजमान कर मधु गोस्वामी को इनकी सेवा पूजा सौंपी।
- औरंगजेब द्वारा हिन्दू मंदिर ध्वस्त करने के दौरान इस विग्रह को 1699 ई. में मधु पंडित"मधु गोसाई इसे कामां लाये, जहाँ से पश्चिम बंगाल के वर्धमान के शासक त्रिलोकचन्द और उसकी रानी भानुमति द्वारा यह विग्रह जयपुर लाया गया। गोपीनाथ जी के विग्रह का जयपुर में प्रवेश श्रावण कृष्णा 13, शनिवार को हुआ था। इस प्रकार भगवान गोपीनाथ का विग्रह 48 वर्ष कामा में रहा उसके बाद 17 वर्ष जयपुर के माधव विलास में रहा। बाद में जयपुर के दीवान खुशालीराम बोहरा ने अपनी हवेली में इसे प्रतिष्ठापित करवाया।

लक्ष्मीनारायण बिड़ला मंदिर- जयपुर

- इस मंदिर का निर्माण प्रसिद्ध उद्योगपति गंगाप्रसाद बिड़ला द्वारा करवाया गया था। मकराना के सफेद संगमरमर से निर्मित यह एशिया का प्रथम वातानुकूलित मंदिर माना जाता है।

राजेश्वर शिवालय- मोती डूँगरी (जयपुर)

- इसका निर्माण 1864 में रामसिंह द्वितीय द्वारा करवाया गया था, जयपुर राजाओं का यह निजी मंदिर है। महाशिवरात्री के दिन जनसाधारण के लिए खुलता है।

मोती डूँगरी गणेश मंदिर- मोती डूँगरी (जयपुर)

- इस मंदिर का निर्माण 1761 ई. में माधोसिंह प्रथम द्वारा करवाया गया था। यह प्रतिमा जयपुर नरेश माधोसिंह प्रथम की पत्नी अपने पीहर मावली से लाई थी।

अम्बिकेश्वर मंदिर- आमेर (जयपुर)

- इस मंदिर का निर्माण कोकिलदेव ने करवाया था, बाद में इसके जीर्णोद्धार मिर्जा राजा जयसिंह ने करवाया।

- छवाहा शासकों द्वार निर्मित देव प्रासादों में अम्बिकंश्वर महादेव मंदिर सबसे प्राचीन है। (म्रोत- सुजस, पेज नं, 1117)

❑ **सूर्य मंदिर-** गलता जी (जयपुर)

- गलता जी के पास एक पहाड़ी पर स्थित है, इसका निर्माण सवाई जयसिंह द्वितीय कं शासनकाल में गब कृपाराम ने करवाया था।
- इस मंदिर में ब्रह्मा, विष्णु, पार्वती, गणेश सहित अनेक देवी-देवताओं की मुर्तियाँ है स्थापित है। यहाँ माघ शुक्ल सप्तमी को बहुत बड़ा मेला लगता है। ग्रोत- सुजस , पेज नं, 1140)

सूर्य मंदिर - आमेर

- यह एक प्राचीन सूर्य मंदिर है यहाँ लगे एक 954 ई. कं शिलालेख के अनुसार आमेर क नागरिक चामुण्डहरि कं पुत्र ने इसका निर्माण करवाया था।

विश्व का प्रथम कल्की मंदिर – जयपुर

- यह कलयुग के अवतार भगवान कल्की का विष्णु मंदिर है। यह राजग्थान का प्रथम कल्की मंदिर माना जाता है।
- दक्षिणायन शिखर शैली में निर्मित इस मंदिर का निर्माण सवाई जयसिंह द्वारा 1739 ई. में करवाया गया था।
- **हरिहर मंदिर - जयपुर**

- **बृहस्पति संदिर- जयपुर**
- यह राजस्थान का प्रथम बृहस्पति मंदिर माना जाता है। परद्रुमप्रभु मादिर- पदमपुरा (जयपुर)
- यह दिगंबर जैन सम्प्रदाय का मंदिर है। यहाँ भगवान पद्म प्रभू की भूमि से प्रकट हुई प्रतिमा स्थापित है।
- **कल्याण जी का मंदिर- आमेर (जयपुर)**
- यह मंदिर प्रतिहारकालीन कला का उत्तम उदाहरण है।
- **लक्ष्मीनारायण जी का मंदिर- आमेर (जयपुर)**
- आमेर शासक पृथ्वीराज की पत्नी बालाबाई ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था।
- **चूलगिरी जैन मदिर- जयपुर**
- जयपुर शहर से बाहर एक उँची पहाड़ी पर स्थित यह मंदिर है भगवान पार्श्वनाथ को समर्पित है।

दौसा जिला-

- **हर्षद माता मंदिर - आभानेरी (दौसा)**
- यह मूलत: विष्णु भगवान का मंदिर हैं। 8वीं शताब्दी में बना यह मंदिर गुर्जर-प्रतिहारकालीन स्थापत्य कला (महामारू शैली) का उदाहरण है। मंदिर स्वास्तिक के आकार का है। 11वीं शताब्दी में इस प्रदेश को महमूद गजनवी ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। और मंदिर भी पूर्णतया क्षतिग्रस्त हो गया। (स्रोत- राजस्थात का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा-10 मा. शि. वो. अजमेर)
- अपनी कलात्मकता के लिए प्रेसिद्ध चाँद खावड़ी भी यहीं पर बनी है।
- मेहन्दीपुर बालाजी मंदिर – मेहन्दीपुर (दौसा)
- यहाँ स्थित हनुमान जी की मूर्ति पर्वत का ही अंग है, किसी कलाकार से बनवाकर नहीं लगवाई गई है। भूत प्रेत से पीड़ित लोग यहाँ आते हैं। यहाँ चैत्र पूर्णिमा को विशाल मेला भरता है। दी पहाड़ियों के बीच की घाटी में स्थित होने के कारण इसे 'मेहन्दीपुर घाटा' भी कहा जाता है।

- **अलवर जिला-**
- **नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर-अलवर**
- सरिस्का टाईगर रिजर्व में स्थित इस गुर्जर प्रतिहारकालीन मंदिर का निर्माण राजगढ़ परगना के राजा अजयपाल ने 1010 ई. में करवाया था। उस समय यहाँ पारानगर शहर बसा हुआ था। यहाँ पर काले रंग का नीलम धातु का शिवलिंग स्थापित है। यहाँ नृत्य करते हुये गणेशजी की मूर्ति है। कुछ विद्वान इसका निर्माण बड़गुर्जर राजा मंथन देव द्वारा करवाया जाना बताते हैं।
- **भृतहरि मंदिर अलवर**
- उज्जैन के राजा भूत्तहरि ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में सरिस्का को ही अपनी तपोस्थली बनाया था। इसे 'कनफटे साधुओं का कुंभ / तीर्थस्थल कहा जाता है। यहाँ वर्ष में दो बार वैशाख और भाद्रपद मास की शुक्ल सप्तमी - अष्टमी को लक्खी मेला लगता है।

- **पांडुपोल हनुमानजी का मंदिर- अलवर**
- यहाँ हनुमान जी की शयन मुद्रा में प्रतिमा स्थापित है। ऐसी मान्यता है कि अज्ञातवास में रहने के दौरान पांडवों को कौरवों की सेना ने आ घेरा था तब महाबली भीम ने पहाड़ में गदा मारकर अपना रास्ता निकाला था, तब से यह स्थान 'पांडुपोल' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।
- **सोमनाथ मंदिर भानगढ़ (अलवर)**
- इसकी स्थापना आमेर नरेश मानसिंह के छोटे भाई माधोसिंह 1631 में की थी। यह मंदिर गुजरात के सोमनाथ मंदिर की प्रतिकृति है।

- **तिजारा जैन मंदिर- तिजारा (अलवर)**
- यह जैन धर्म के 8वें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु का मंदिर है. देहरा नामक स्थान से चन्द्रप्रभु की यह प्रतिमा प्राप्त हुई थी।

- **नौगावां का जैन मंदिर- नौगाँवा (अलवर)**
- यह जैन तीर्थकर मल्लीनाथ जी का मंदिर है। यहाँ मल्लीनाथ जी की प्रतिमा की पीठ पर प्रशस्ति अंकित है।

- **नौगजा जैन मंदिर- अलवर**
- नीलकंठ मंदिर से कुछ ही दूरी पर स्थित इस मंदिर में जैन तीर्थकर पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित है जो 27 फीट (9 गज) ऊँची प्रतिमा है।

- **बाबा मोहनराम का थान मलिकपुर (भिवाड़ी, अलवर)**

- **नारायणी माता मंदिर - बरवा डूंगरी (अलवर)**
- इनका विस्तृत विवरण लोकदेवियों में देखें।

Thank You.....

Like & Share

Click the Icon to Connect with Us ....

Call Now to Connect with Our Support Team

info@class24.study +91-7849841445, +91-8302972601 , +91-7877518210